वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

सितम्बर 01-15, 2025

कुटुम्ब प्रबोधन के आदर्श देव हैं गणेश जी

रुड़की (उत्तराखण्ड) में विहिप द्वारा आयोजित सामाजिक समरसता संगोष्ठी को संबोधित करते विहिप के सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा कार्यक्रम में उपस्थित परिषद तथा सर्वसमाज के बंधु/भगिनी

लखनऊ (उ.प्र.) में सिख, बौद्ध, कबीरपंथी, संन्यासी, गायत्री परिवार, इस्कॉन आदि अनेक परंपराओं के पूज्य संतों के सम्मेलन में उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

अयोध्या (उ.प्र.) में 84 कोसी परिक्रमा पड़ाव के व्यवस्थापकों की बैठक को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

नई दिल्ली स्थित विहिप केन्द्रीय कार्यालय में केन्द्रीय पदाधिकारियों तथा परिषद कार्यालय की सुरक्षा में तैनात सीआरपीएफ एवं दिल्ली पुलिस के जवानों को रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन उत्सव मनाती बसंत जिला दुर्गावाहिनी एवं मातृशक्ति की कार्यकर्त्रियाँ

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01–15 सितम्बर, 2025

भाद्रपद शुक्ल - आश्विन कृष्ण पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. - 2082, युगाब्द– 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

प्रश्न है कि हे सत्य के रक्षक! (अग्नि– परमात्मा, आप) किस प्रकार के व्यक्ति की बुद्धि को विशेष रूप से सत्य मार्ग पर प्रेरित करते हैं? उत्तर है कि जिसकी वाणी ज्ञान का बोध कराने वाली होती है, उसे सत्य के मार्ग पर प्रेरित करते हैं।

– सामवेद

स्व बोध क्यों जरूरी	07
वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बढ़ता अमेरिकी आतंक और भारत	10
असम में पूर्वचल तक डेमोग्राफिक चेंज जनसँख्या की उथल–पुथल का सच	12
साहिबाबाद मंडी से हिन्दू व्यापारी कहाँ विलुप्त हो गए	13
भगवा आतंकवाद की मनगढ़न्त कहानी ध्वस्त	14
ध्वस्त हुआ एक और झूठा नैरेटिव	17
मालेगांव विस्फोट एवं भगवा कलंक की साजिश	19
करें सुबह की धूप का सेवन	21
समरस समाज ही सशक्त भारत की रीढ़ : विनायक राव देशपांडे	22
चिरंजीलाल धानुका स्मृति समाजसेवा अवार्ड प्रज्ञाता फाउंडेशन को सेवा एवं संवेदना की दृष्टि जगाना जरूरी : ए.पी. सिंह	23
श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ राजस्थान प्रांत की कार्यकारिणी बैठक संपन्न	24
रक्षा बंधन 2025 : सुरक्षा और समुदाय के बंधन का उत्सव	25
हिंदू समाज को विखंडित करनेवाली शक्तियों को देंगे करारा जवाब : अजय पारीक	26

सुभाषित

चिता चिन्तासमःयुक्ता बिन्दुमात्र विशेषतः।
सजीवं दहते चिन्ता निर्जीवं दहते चिता।।

चिता और चिंता में मात्र एक बिन्दु (अनुस्वार) का ही फर्क है, किन्तु दोनों ही एक समान हैं, जो जीते जी जलाता है वह चिंता है और जो मरने के बाद (निर्जीव) जलाता है वह चिता है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

कुटुंब प्रबोधन
भारतीय संस्कृति के पोषण का आधार

भारत की संस्कृति का हृदय कुटुंब है। जिस समाज में परिवार की धुरी कमज़ोर पड़ जाती है, वह समाज लंबे समय तक स्थिर नहीं रह सकता। आज की बदलती जीवन–शैली में जब 'एकल परिवार' और 'अकेलेपन' की प्रवृत्ति बढ़ रही है, तब गणेश चतुर्थी जैसा पर्व हमें स्मरण कराता है कि परिवार केवल रक्त संबंधों का नाम नहीं, बल्कि परस्पर उत्तरदायित्व, अनुशासन, प्रेम और संस्कार का जीवंत विद्यालय है।

भगवान गणेश के रूप में कुटुंब की आधारशिला

गणपति विघ्नहर्ता माने जाते हैं, परन्तु उनके स्वरूप में हमें कुटुंब प्रबोधन का अद्‌भुत संदेश भी मिलता है। माता पार्वती और पिता महादेव का आज्ञापालन, कार्तिकेय के साथ भ्रातृत्व का आदर्श, और रिद्धि–सिद्धि सहित संतति का आश्रय – यह सब परिवार को जीवन का केन्द्र बनाने की प्रेरणा है। गणेश जी के मूषक वाहन से लेकर मोदक प्रियता तक हर प्रतीक हमें यह सिखाता है कि जीवन तभी मधुर है जब वह सांझेपन और बाँटने की भावना से भरा हो।

परिवार : सभ्यता की आधारशिला

भारतीय परंपरा में कुटुंब को "आत्मनः प्रतिकृतिः" कहा गया है। परिवार ही वह स्थान है, जहाँ प्रथम बार धर्म, नीति और मर्यादा का अभ्यास होता है। बच्चे माता–पिता से वाणी का संस्कार, बड़ों से सेवा का भाव और वातावरण से सहिष्णुता का पाठ सीखते हैं। यदि कुटुंब स्वस्थ और संस्कारित होगा, तभी समाज और राष्ट्र भी सुशासन और अनुशासन से ओतप्रोत होंगे। आधुनिक समय में कुटुंब व्यवस्था पर गंभीर आघात हो रहे हैं।

- पश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति में व्यक्तिवाद और स्वच्छंदता का प्रचार।
- वृद्धजन की उपेक्षा और माता–पिता को बोझ मानने की प्रवृत्ति।
- युवा वर्ग का सोशल मीडिया के आभासी संसार में उलझ जाना।
- वैवाहिक संस्था पर आघात और परिवारिक बंधनों का शिथिल होना।

ये सभी प्रवृत्तियाँ केवल व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे समाज को विघटित कर रही हैं। इस स्थिति में गणेश चतुर्थी का सामूहिक उत्सव हमें याद दिलाता है कि जब पूरा मोहल्ला, गली और शहर मिलकर एक ही गणपति की प्रतिमा की स्थापना करता है, तब समूह ही परिवार है और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेशोत्सव को सार्वजनिक रूप दिया। उनका उद्देश्य था – अंग्रेज़ी दमन के काल में समाज को जोड़ना और राष्ट्र में चेतना जगाना। यह परंपरा आज भी हमें यह सिखाती है कि घर के भीतर और समाज के बीच उत्सव तभी सार्थक है, जब वह कुटुंब और समाज को मजबूत करे।

गणपति विघ्नहर्ता माने जाते हैं, परन्तु उनके स्वरूप में हमें कुटुंब प्रबोधन का अद्‌भुत संदेश भी मिलता है। माता पार्वती और पिता महादेव का आज्ञापालन, कार्तिकेय के साथ भ्रातृत्व का आदर्श, और रिद्धि–सिद्धि सहित संतति का आश्रय – यह सब परिवार को जीवन का केन्द्र बनाने की प्रेरणा है। गणेश जी के मूषक वाहन से लेकर मोदक प्रियता तक हर प्रतीक हमें यह सिखाता है कि जीवन तभी मधुर है जब वह सांझेपन और बाँटने की भावना से भरा हो।

कुटुम्ब के रक्षक-प्रतिपालक देव हैं गणपति

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

मातृ–पितृ भक्त गणपति, भाई से अतिशय प्रेम करने वाले गणपति, अपने पूरे परिवार को सजगता से सम्भालते हुए अपने गणों के भी प्रतिपालक हैं गणपति। वस्तुतः गणपति कुटुम्ब प्रबोधन के आदर्श देव हैं।

कौटुम्बिक सौम्य के देव गणपति

लिंग पुराण पुर्वभाग 104/2–6 में वर्णन है कि असुर, यातुधान, क्रूर कर्मवाले राक्षस तथा तमोगुणी एवं रजोगुणी लोगों द्वारा धर्म कार्यों में डाले जाने बाधाओं को निर्मूल करने के लिए, देवताओं के लोककल्याणकारी सत्कर्मों को अविघ्न सम्पन्न करने के लिए, स्त्रियों को पुत्रप्राप्ति सुगम करने के लिए तथा पुरूषों के कर्म की सिद्धि के लिए गणपति गणेश का सृजन हुआ।

मजदूरों के संरक्षक गणपति

गणपति के विहित कर्मो के बारे में शिवजी ने कहा है कि जो यज्ञ (काम) करवाये और बदले में दक्षिणा (मजदूरी) न दे, तो ऐसे लोगों के धर्म (प्रवृति) में तुम स्वर्गपथ (फल मिलने वाला तंत्र) में स्थित रहकर विघ्न डालो। अर्थात् भ्रष्टाचारियों की मनसा फलीभूत न होने दो। भ्रष्ट आचरण के फलस्वरूप वो सुखी न होने पायें। गणपति का पूजन कौटुम्बिक सुख–सौख्य प्रदान तो करता ही है, समाज में भ्रष्टाचारमुक्त, न्यायपूर्ण, स्वच्छ वातावरण के निर्माण में सहायक होता है।

समरसता के प्रतिक गणपति

लिंगपुराण के पुर्वभाग 105/24 में गणेश जी को चतुर्वर्ण से पूजित बताया गया है। गणेश जी चारों वर्णों के सभी लोगों में कोई भेद नहीं करते और सबके धर्ममय जीवनाचार को विघ्न रहित बनाते हैं। सबके यश का मार्ग प्रशस्त करते हैं। सभी के घर में पुत्र जन्म सुनिश्चित करते हैं। सबके कुटुम्ब में सुख की स्थापना करते हैं।

वामपंथी इकोसिस्टम के नाशक गणपति

शिवजी ने कहा कि हे मेरे पुत्र! इस पृथ्वीतलपर जो भी अन्यायपूर्वक अध्ययन, अध्यापन, व्याख्यान तथा अन्य दुष्ट कर्म करता हो, उसके प्राणों को सदा हरते रहो। अध्यापन चाध्ययनं व्याख्यानं कर्म एव च। योऽन्यायतः करोत्यस्मिंस्तस्य प्राणान् सदा हर।। (105/17) शिव जी अन्यायपूर्ण और अकल्याणकारी, विध्वंसक अध्ययन करने वाल छात्रों की, ऐसी शिक्षा देने वाले अध्यापकों की और ऐसे झूठे व षड्यंत्रकारी बातों को अपने व्याख्यान और भाषणों में बोलने वालों की हत्या कर देने का आदेश बाल गणेश को देते हैं। और एक बार ही ऐसी हत्या करने की बात नहीं कहते शिवजी, तो सदा, अर्थात् बार–बार ऐसे लोगों की हत्या करने की आज्ञा देते हैं। अर्थात् इस प्रकार के मिथ्या प्रलापी लोग जीवन जीने के अधिकारी नही हैं, उनकी परम्परा का नाश हो जाए, यह आशय है शिवजी का।

कर्म और धर्म से भटके लोगों के विनाशक

गणेश जी, अपने कर्म से भटककर अपने वर्ण को दूषित कर रहे लोगों एवं धर्म के मार्ग से भटक गए लोगों के भी प्राण नाशक हैं। (105/18) अर्थात् गणेश जी कुटुम्ब में कर्ममय वातावरण, कर्तव्यमय

भगवान बिरसा और चाणक्य गणेश जी के सच्चे अनुगामी

भगवान बिरसा मुंडा ने अपनी 8 वर्ष की आयु में मिशनरीज द्वारा झूठ बोलकर भोले–भाले जनजातीय बच्चों का धर्मांतरण करने के कर्म का विरोध किया और मिशन का विद्यालय छोड़ दिया। ऐसी मिथ्या शिक्षा का विरोध तो हर विद्यार्थी को करना चाहिए। यही आज्ञा तो शिवजी बाल गणेश को दे रहे हैं। और यही काम चाणक्य ने घनानंद के मिथ्या प्रलाप का विरोध कर के किया। विष्णुगुप्त ने न केवल घनानंद के मिथ्या दम्भ और अन्यायपूर्ण प्रलाप और शासन का विरोध किया, अपितु उसके अधर्म पर आधारित राज्य का समूल नाश कर दिया। यदि इन दोनों के जीवन दर्शन का सूक्ष्म अध्ययन किया जाए, तो ये दोनों ही गणेश जी के इन गुणों के सच्चे अनुगामी हैं।

जीवन व्यवहार, धर्म परायण जीवन शैली, सबका ध्यान रखने वाले जीवन व्यवहार के पक्षधर हैं।

युवाओं की शिक्षा और वृद्धों की सेवा के देव

गणेश जी युवाओं को न्यायपूर्ण, सेवापरायण, कर्तव्यपरायण, धर्मपरायण शिक्षा देने वाले देव हैं। बाल्यावस्था में ही ये सारे गुण बच्चों को मिल जायें, यह शिवजी का आदेश है बाल गणेश्वर को। (105/20) और यह भी कहा है कि वृद्धों की सेवा भी करना है और उनकी रक्षा भी करना है। वृद्धों की सेवा और रक्षा प्रयत्नपूर्वक करने की आज्ञा उनको देते हैं शिवजी। शायद इसी आज्ञा के आधार पर यह समाज में स्थापित हुआ कि जिस घर में वृद्ध न हों, वह घर, घर नहीं होता है। जिस सभा में वृद्ध नहीं होते हैं, वह सभा सभा नहीं कहा जा सकता। और युवाओं की उपरोक्त प्रकार की शिक्षा और वृद्धों की सेवा, रक्षा करने की फलश्रुति सुनाते हुए शिवजी कहते हैं कि हे गणेश ऐसा करने से तुम विघ्नेश्वर के रूप में पूजनीय और वन्दनीय हो जाओगे।

अर्थात् दुनियाँ की समस्त बाधाओं और समस्याओं के उन्मूलन का सूत्र है, बच्चों को उचित शिक्षा एवं वृद्धों (अनुभव और ज्ञान) की सेवा और रक्षा। ऐसा करने वाले परिवार और समाज सर्वत्र पूजनीय और वन्दनीय हो जाते हैं, यह शिवजी बाल गणेश को कह रहे हैं। बाल गणेश के ये कुटुम्ब परक गुण ही उनको विघ्नेश्वर बनाते हैं।

देवताओं, द्विजों और ज्ञानियों के रक्षक

शिवजी जी ने कहा कि गणेश, तुम्हारा अवतार दैत्यों के विनाश के लिए और देवताओं, द्विजों और ब्रह्मवादियों के उपकार एवं रक्षा के लिए हुआ है। (105/15) देवता का अर्थ होता है विशिष्ट प्रकार के उत्कृष्ट गुणों से युक्त विभुतियाँ। द्विज का अर्थ होता है, ऐसे लोग जो ज्ञानार्जन में प्रवृत्त हो चुके हैं, सभी संस्कारों से युक्त हो जाने के उपरांत ज्ञान अर्जन की दिशा में बढ़ चले हैं। और ब्रह्मवादी का अर्थ होता है, ज्ञानार्जन करके, ज्ञान आधारित साधना के बलपर समाधी की अवस्था में जाकर जिन लोगों ने ब्रह्म से सायुज्य प्राप्त कर लिया है और ब्रह्म के तत्वों से तादात्म्य स्थापित कर आप्त वचन बोलने की योग्यता अर्जित कर चुके हैं। ऐसे सभी लोगों का उपकार करने वाला गणपति हो जाता है। ऐसे लोगों का प्रतिपालक हर व्यक्ति गणनायक के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह गणेश जी की प्रमुख योग्यताओं में से एक है।

समय के पालक भी हैं गणेश जी

जो समय का पालन नहीं करते, जो आलसी हैं, जो प्रमादी हैं, जो परिवार और कुटुम्ब के हितों को छोड़कर व्यर्थ के मनोरंजन में अपना समय खराब करते हैं, कुटुम्ब और परिवार की सहायता नहीं करते, उनकी अनदेखी करते हैं, ऐसे सभी लोगों के प्रति विनाशक भाव रखते हैं गणपति। जो गणेश जी को कालरूप समझकर, काल के देवता समझकर, समय के प्रतिपालक समझकर, स्वयं समय का पालन करते हुए, परिवार–कुटुम्ब के प्रति अपने सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए गणपति की आराधना और प्रार्थना करते हैं, गणपति केवल उनकी ही सुनते हैं।

सभी देवों के पूजा के फल प्रदाता गणपति

शिवजी कहते हैं कि कोई सभी देवों की पुजा कर ले, ब्रह्मा, विष्णु और मेरी (शिव की) अथवा इन्द्र की भी पुजा कर ले और गणेश तुम्हारी पुजा न करे, तो उसे पुजा का फल नहीं मिलेगा और तुम्हें नकारकर अन्य देवों की पूजा करने वालों की पूजा में तुम विघ्न उत्पन्न कर देना।(105/27) अर्थात् गणपति के उपरोक्त वर्णित कुटुम्बपरक सभी गुणों को आत्मसात करना ही गणेश को मानने और पुजने का तरीका है। यदि गणपति का पूजन नहीं किया अर्थात् उपरोक्त कौटुम्बिक बातों को नकार कर देवताओं की पूजा की, तो वो सभी पूजा व्यर्थ हैं, उसका कोई फल नहीं मिलेगा, वह सब व्यर्थ हो जाएगा।

कुटुम्ब के साथ पूजा का विधान

गणपति के गुणों को अपनाकर गणेश पूजन करना ही फलदायी है। गणेश तो कुटुम्ब के देव हैं, अतः उनकी पूजा और अन्य देवताओं की भी पूजा कुटुम्ब के साथ ही करने का विधान है। तीर्थ यात्रा भी सकुटुम्ब, सबन्धु–बान्धव करने का विधान है। परिवार–कुटुम्ब बनाना और सम्भालना भी गणपति की पूजा के बराबर है। गणपति परिवार और कुटुम्ब को जोड़ने वाले देव हैं, सम्हालने वाले देव हैं, कुटुम्ब के रक्षक देव हैं, प्रतिपालक देव हैं और सुख–समृद्धि बढ़ाकर ऋद्धि–सिद्धि देने वाले देव हैं, शुभ–लाभ देने वाले देव हैं।

murari.shukla@gmail.com

स्व बोध क्यों जरुरी

पंकज जगन्नाथ जयसवाल

भारत विशाल और विविधतापूर्ण देश है। फिर भी एक अदृश्य लेकिन दूरस्थ एकीकृत शक्ति इस राष्ट्र को जीवित रखती है। यह शक्ति भारत की सँस्कृति है, जिसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय 'विराट' कहते हैं। मिस्र, यूनान और रोम जैसी महान सभ्यताएँ विलुप्त हो जाने के बाद भी भारत जीवित है। भारत का वैश्विक दर्शन और सँस्कृति चीन, जापान और अधिकांश दक्षिण पूर्व एशिया को प्रभावित करने का एक लंबा इतिहास रहा है और इक्कीसवीं सदी में भी इसकी आवश्यकता है। भारत के पास सांझा करने के लिए एक समृद्ध साँस्कृतिक इतिहास है। इसे अब कहीं और से लिए गए शब्दों और विचारों की बेड़ियों में नहीं बांधा जा सकता। भारतीय ज्ञान में मानवता की निर्बाध सेवा करने की अपार क्षमता है। हालाँकि पहले कदम के रूप में भारतीयों को अपनी मातृभूमि के कालातीत स्वरूप को आधुनिक शब्दों में पुनर्परिभाषित, पुनर्वर्णित और पुनर्संयोजित करना होगा, ताकि वे स्वयं उसे आत्मसात कर सकें।

दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसार चिति, शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है, जिसे विराट भी कहा जाता है। यह राष्ट्र को विकृतियों और अनियमितताओं से बचाती है और राष्ट्रीय जागृति को प्रोत्साहित करती है। उनका मानना है कि केवल चिति और विराट को सक्षम करके ही राष्ट्र और लोग समृद्ध होंगे, सभी प्रकार के लौकिक और आध्यात्मिक सुखों का अनुभव करेंगे, विश्व में विजय प्राप्त करेंगे और गौरव प्राप्त करेंगे।

राष्ट्र के जीवन में 'विराट' की भूमिका शरीर में प्राण के समान है। जिस प्रकार 'प्राण' शरीर के विभिन्न अंगों को ऊर्जावान बनाता है, मन को तरोताजा करता है और शरीर और आत्मा को एक साथ रखता है, उसी प्रकार लोकतंत्र की सफलता और सरकार के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए एक मजबूत 'विराट' आवश्यक है। हमारे देश की विविधता इसकी एकजुटता के लिए खतरा नहीं है। भाषा, व्यवसाय और अन्य भेद हर जगह पाए जाते हैं। जब 'विराट' जागृत होता है, तो मतभेद संघर्ष का कारण नहीं बनते और व्यक्ति एक साथ मिलकर काम करते हैं, जैसे कि वे परिवार के सदस्यों से बने मानव शरीर के कई अंग हों।

स्व पर गोलवरकर गुरुजी के विचार

किसी भी नव–स्वतंत्र राष्ट्र के नेतृत्व का सबसे महत्वपूर्ण कार्य उसकी जनता की मानसिकता में आवश्यक परिवर्तन लाना होता है। श्री गुरुजी नव–स्वतंत्र भारत की मानसिकता से भली–भांति परिचित थे। अँग्रेजों ने भारत को न केवल राजनीतिक और आर्थिक रूप से बल्कि साँस्कृतिक और सामाजिक रूप से भी अपने अधीन कर लिया था। वे अपनी कुटिल योजनाओं में काफी सफल रहे थे। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने इस वास्तविकता को पहचाना और स्वदेशी, गोरक्षा, स्वभाषा आदि को बढ़ावा देकर इस आत्मघाती मानसिकता को मिटाने का प्रयास किया। डॉक्टर जी के बाद श्री गुरुजी ने संघ के माध्यम से इन सिद्धांतों के बारे में जन ज्ञान बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किए। स्वदेशी के बारे में उनकी मान्यताएँ सर्वव्यापी थीं। स्वदेशी का उनका दर्शन स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से आगे बढ़कर दैनिक जीवन के सभी पहलुओं को

शामिल करता था, जैसे विवाह के निमंत्रण या कार्यक्रमों की शुभकामनाएँ अपनी मातृभाषा में भेजना और हिंदू परंपरा के अनुसार जन्मदिन मनाना आदि।

जब आरएसएस अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है और हमारा राष्ट्र 'अमृत काल' युग में प्रवेश कर चुका है। तब अपने राष्ट्र को महान बनाने और 2047 तक एक बेहतर विश्व में योगदान देने के लिए, हमें स्वामी विवेकानंद और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन का अनुसरण करना होगा। एक समाज के रूप में हमें इन वैश्विक अच्छे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार के साथ मिलकर काम करना होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने व्यापक चिंतन किया और 'पंच परिवर्तन' नामक पाँच सूत्र विकसित किए। ये मूलतः प्रमुख बिंदु हैं।

1. स्व बोध
2. पर्यावरण
3. सामाजिक समरसता
4. नागरिक शिष्टाचार
5. कुटुम्ब प्रबोधन

इन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर कार्य करने से हमारे राष्ट्र का भविष्य तय होगा। इसी क्रम में, आइए 'स्व बोध' पर विचार करें। अपनी स्थापना के समय से ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों का पालन करता रहा है। स्वामी विवेकानंद का उद्देश्य राष्ट्र के गौरव को पुनर्स्थापित करना था और उन्होंने हमारे बच्चों में भारत में आत्मनिर्भरता की भावना का संचार करने के लिए एक मजबूत साँस्कृतिक और धार्मिक आधार के साथ विभिन्न पहलुओं पर जोर दिया। आरएसएस न केवल आत्मनिर्भर भारत में विश्वास करता है, बल्कि युवाओं के साथ जमीनी स्तर पर काम भी करता है, व्यवसायों का समर्थन करता है।

आत्मनिर्भर भारत इक्कीसवीं सदी के महान कार्यों को पूरा करने का साधन है। भारत की आत्मनिर्भरता वैश्विक सुख, सहयोग और शांति पर केंद्रित है। जो सँस्कृति 'जय जगत' में विश्वास रखती है, मानव मात्र के कल्याण की चिंता करती है, पूरे विश्व को एक परिवार मानती है, 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' के भाव को अपनी आस्था में स्थान देती है, वो सँस्कृति जो पृथ्वी को माता मानती है, वो भारत भूमि जब आत्मनिर्भर बनती है, तो एक सुखी–समृद्ध विश्व की संभावना सुनिश्चित करती है। भारत की प्रगति, हमेशा से वैश्विक प्रगति से जुड़ी रही है।

भारत में विकास के लिए आत्मनिर्भरता क्यों आवश्यक है?

आइए हम इसे व्यापक स्तर पर स्पष्ट करें। लंबे समय तक हम मुगलों और उसके बाद अँग्रेजों द्वारा आर्थिक और सामाजिक रूप से तबाह होते रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी, हमें यह विश्वास दिलाया गया कि हम विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में चीन और अन्य धनी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते। हम धीरे–धीरे चीनी उत्पादों के आदी हो गए, अपने घर में ही देखिए कि कितनी ही वस्तुएँ चीन में बनती हैं। हमने मूर्तियाँ और पूजा सामग्री भी उनकी खरीदनी शुरू कर दी, जो हमारे अस्तित्व और अन्य आवश्यकताओं के लिए चीन पर एक प्रकार की मानसिक गुलामी और निर्भरता है। यह एक ऐसा देश है, जिसने हमेशा हमें धोखा दिया है, हमारे नागरिकों और सैनिकों को मारने के उनके प्रयासों में हमारे दुश्मन देश पाकिस्तान और उसके आतंकवादियों का समर्थन किया है। चीन भारत में नक्सलवाद को बढ़ावा देता है। उसने कभी भी वैश्विक स्तर पर भारत का समर्थन नहीं किया, बल्कि हमारे लोगों को आतंकित करने में दुश्मन देशों का समर्थन किया और भाग लिया। वे पूर्वोत्तर और कश्मीर के क्षेत्रों को कभी भारत का हिस्सा नहीं मानते। फिर भी हमारी पिछली सरकारों द्वारा स्थापित नियमों और सँस्थाओं ने विनिर्माण या सेवा क्षेत्र में कदम रखने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए कठिन परिस्थितियाँ और वास्तव में मानसिक पीड़ा पैदा की, जिससे हमारी अर्थव्यवस्था चीन की तुलना में काफी कमजोर रही। टाटा, अंबानी, अडानी, महिंद्रा और कई अन्य जैसे हमारे अग्रदूतों की दृढ़ता और दृढ़ संकल्प को धन्यवाद, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी भारतीयों में हमारी क्षमताओं के प्रति गर्व और विश्वास जगाया।

भारत की तेजी से बढ़ती जनसँख्या को देखते हुए, कोई भी सरकार समान सँख्या में रोजगार पैदा करने के लिए संघर्ष करेगी। केवल रोजगार चाहने वालों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय आवश्यक ज्ञान और क्षमताओं वाले अधिक उद्यमी तैयार करने के प्रयास किए जाने चाहिए। यहीं पर आरएसएस अपने प्रयासों को केंद्रित करता है। रूस और यूक्रेन की हालिया स्थिति आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को उजागर करती है, आयातित ईंधन और अन्य प्रमुख वस्तुओं पर बड़े पैमाने पर निर्भरता खतरनाक है। हैरानी की बात है कि हम कई ऐसी चीजें आयात करते हैं, जिनका आविष्कार सदियों पहले भारत में हुआ था और जिनमें उपयुक्त क्षमताएँ थीं। हालाँकि भारत में आसानी से विकसित हो सकने वाले उद्यमी और रोजगार चीन पर निर्भर हो गए हैं। आरएसएस और उससे जुड़े संगठन हमारे युवाओं को आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करने के लिए सरकार और अन्य सँस्थानों के साथ मिलकर काम करते हैं।

स्थिति बदल रही है और इन उत्पादों को देश में ही बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है और 'मेक इन इंडिया' उत्पादों से मजबूत भावनात्मक जुड़ाव के साथ प्रचारित किया जा रहा है। लोगों की देशभक्ति की भावना और भारतीयत्व के प्रति गर्व बढ़ा है, साथ ही विरोधी देशों चीन और पाकिस्तान के प्रति उनका आक्रोश भी बढ़ा है। भारतीय उत्पादों के क्रेता और विक्रेता के बीच जितना बेहतर संबंध होगा, अर्थव्यवस्था साल–दर–साल उतनी ही मजबूत होगी, जिसके परिणामस्वरूप रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। यह हमें शुद्ध निर्यातक बनाएगा। बदलती वैश्विक गतिशीलता के कारण, आने वाले वर्षों में भारत आर्थिक मोर्चे पर एक बड़ी भूमिका निभाएगा, साथ ही सभी के लाभ के लिए आध्यात्मिक और समग्र विकासोन्मुखी दृष्टिकोण और पर्यावरण संतुलन व पोषण भी अपनाएगा। वर्तमान सरकार की व्यापार–समर्थक नीतियों के साथ–साथ कुशल और जानकार कार्यबल, प्रत्येक क्षेत्र को मजबूत करेगा और अर्थव्यवस्था को चीन से प्रतिस्पर्धा करने

के लिए नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा।

इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'वोकल फॉर लोकल' की घोषणा करके 'आत्मनिर्भर भारत' कार्यक्रम की शुरुआत की। वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार भारत चीन से स्मार्टफोन, बिजली के उपकरण, बिजली संयंत्रों के इनपुट, उर्वरक, ऑटो कंपोनेंट, तैयार स्टील उत्पाद, बिजली संयंत्रों जैसे पूंजीगत सामान, दूरसंचार उपकरण, मेट्रो रेल कोच, लोहा और इस्पात उत्पाद, दवा सामग्री, रसायन और प्लास्टिक और इंजीनियरिंग सामान आदि का आयात करता है। इसमें बदलाव की आवश्यकता है, इसलिए एक आत्मनिर्भर आंदोलन की आवश्यकता है। अब हम विभिन्न उत्पादों के आंतरिक निर्माण में सहायता करके भारत की आत्मनिर्भरता की ओर सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

यद्यपि केंद्र सरकार और कुछ राज्यों द्वारा उठाए गए उल्लेखनीय कदमों, जिनके परिणामस्वरूप निर्यात में वृद्धि, विनिर्माण और सेवा गतिविधियों का विस्तार हुआ है, के कारण भारत में आत्मनिर्भरता की हमारी यात्रा फलदायी हो रही है, फिर भी हमारे पास आंतरिक रूप से एक बड़ा बाजार है और एक बड़ा वैश्विक बाजार हमारा इंतजार कर रहा है। केंद्र सरकार की पहलों के लिए सभी राज्यों, नौकरशाही, उद्यमों, उद्योगपतियों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और समग्र रूप से समाज के समर्थन की आवश्यकता है।

अनुसंधान एवं विकास

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अनुसंधान एवं विकास को प्राथमिकता देना है। 'सफलता की कुंजी क्रमिक नवाचार है।' नई शिक्षा नीति अनुसंधान एवं विकास के साथ–साथ व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र के विकास पर भी जोर देती है। सरकारों और अन्य हितधारकों को इसे न्यायिक, लगन और अगले 10 से 15 वर्षों में पूर्णता तक लागू करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उद्योग को भी नवीन विचारों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और उन्हें बढ़ावा देना चाहिए, साथ ही युवाओं को अनुसंधान एवं विकास में नए कौशल और अवसर प्रदान करने चाहिए। यह युवाओं की मानसिकता को पूरी तरह से बदल देगा और उन्हें अपनी रचनात्मक और नवीन क्षमताओं, नई तकनीकों के स्वदेशी विकास और विश्व की समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करेगा।

निष्कर्ष

भारतीयों को यह समझना चाहिए कि हमारा विकास मॉडल यूरोपीय मॉडल से कहीं बेहतर और अधिक सिद्ध है। यदि हम अपनी जड़ों की ओर लौटेंगे और शांति, नैतिक सिद्धांतों, पर्यावरणीय पोषण और संतुलन और सबसे महत्वपूर्ण, वैश्विक विकास, सुख और शांति पर आधारित विकास मॉडल का अनुसरण करेंगे, तो भारत फिर से समृद्ध होगा।

pankajjayswal1977@gmail.com

विश्व हिंदू परिषद मातृशक्ति दुर्गावाहिनी द्वारा दिव्यांग बच्चों संग मनाया गया रक्षाबंधन

देहरादून, 8 अगस्त। विश्व हिंदू परिषद, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी के तत्वावधान में आज कारगी चौक स्थित उड़ान विद्यालय में रक्षाबंधन पर्व को एक विशेष रूप में मनाया गया। इस अवसर पर दुर्गा वाहिनी की बहनों ने दिव्यांग बच्चों को राखी बांधकर उनके साथ यह पावन पर्व सांझा किया। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा प्रस्तुत साँस्कृतिक कार्यक्रमों – गीत और नृत्य ने सभी उपस्थितजनों का मन मोह लिया।

इस अवसर पर प्रांत सह संयोजिका प्रीति शुक्ला ने बताया कि "विश्व हिंदू परिषद, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी हर वर्ष रक्षाबंधन से एक दिन पूर्व समाज के विभिन्न वर्गों के बीच यह पर्व मनाती है। इसी क्रम में आज दिव्यांग बच्चों एवं देहरादून के पुलिस कप्तान श्री अजय सिंह जी, जो सदैव बहनों की सुरक्षा हेतु समर्पित रहते हैं, को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया।" विद्यालय की प्रधानाचार्या मीनाक्षी ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि, "इस आयोजन से बच्चों में विशेष उत्साह देखा गया, और यह एक सराहनीय सामाजिक प्रयास है।"

कार्यक्रम का संचालन दुर्गा वाहिनी की सह विभाग संयोजिका दीपाली शुक्ला ने किया। देहरादून उत्तरी की जिला संयोजिका वंदना रावत एवं दक्षिण जिला संयोजिका आकांक्षा एवं दुर्गा वाहिनी की बहनों ने अपने हाथों से तैयार की गई स्वनिर्मित राखियाँ बच्चों की कलाइयों पर बांधते हुए उन्हें प्रेम और सुरक्षा का संदेश दिया। विभाग मंत्री आलोक सिन्हा ने बताया कि "विश्व हिंदू परिषद हर वर्ष रक्षाबंधन के अवसर पर समाज के प्रहरी चाहे वे पुलिसकर्मी हों या सेना के जवान सभी को यह पर्व समर्पित करती है। दुर्गा वाहिनी की बहनें रक्षासूत्र बांधकर उनके स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करती हैं।" इस आयोजन में व्यवस्था की दृष्टि से जिला मंत्री उत्तरी देहरादून श्री श्याम शर्मा, राजा वर्मा जी एवं देहरादून दक्षिणी के मंत्री श्री विशाल चौधरी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बढ़ता अमेरिकी आतंक और भारत

प्रो. महेश चंद गुप्ता

दुनियाँ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के कारण अमेरिका लंबे समय से वैश्विक आर्थिक नीतियों पर दबदबा बनाए हुए है। यह दबदबा अब खुलेआम दादागिरी का रूप ले चुका है, खासकर जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप मनमाने टैरिफ लगाकर देशों को आर्थिक रूप से झुकाने की कोशिश कर रहे हैं। भारत पर 25 फीसदी टैरिफ लगाने के बाद अतिरिक्त 25 फीसदी टैरिफ की घोषणा ने इस दादागिरी को और स्पष्ट कर दिया है। यानी कुल मिलाकर 50 फीसदी का टैरिफ–यह न सिर्फ व्यापारिक प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करेगा बल्कि वैश्विक व्यापार संतुलन पर भी असर डालेगा। ट्रंप को भारत द्वारा रूस से तेल खरीदने पर आपत्ति है, जबकि विडंबना यह है कि चीन भी यही कर रहा है और अमेरिका स्वयं रूस से यूरेनियम और खाद खरीद रहा है। यानी सिद्धांत और व्यवहार में अमेरिकी नीति दोहरे मानदंडों से भरी है। सवाल यह है कि भारत क्यों अपने हितों को ताक पर रखकर अमेरिकी दबाव में काम करे ?

कल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भारत पर टैरिफ बढ़ोतरी के एलान के बाद पहली बार एमएस स्वामीनाथन शताब्दी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिक्रिया ने भारत के अडिग रुख को और मजबूती से सामने रखा है। उससे भारत का अडिग रवैया परिलक्षित हो रहा है। मोदी ने साफ कह दिया है कि हमारे लिए, हमारे किसानों का हित सर्वोच्च प्राथमिकता है, चाहे उसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े। भारत किसानों, मछुआरों और डेयरी किसानों के हितों से कभी समझौता नहीं करेगा। यह वक्तव्य बताता है कि भारत अब वैश्विक दबावों के आगे नतमस्तक नहीं होगा।

यूनाइटेड स्टेट्स ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव (यूएसटीआर) के आंकड़ों के अनुसार भारत–अमेरिका के बीच वार्षिक व्यापार 11 लाख करोड़ रुपये का है। भारत अमेरिका को 7.35 लाख करोड़ रुपये का निर्यात करता है, जिसमें दवाइयाँ, दूरसंचार उपकरण, जेम्स–एंड–ज्वेलरी, पेट्रोलियम, इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजीनियरिंग उत्पाद और वस्त्र शामिल हैं। वहीं अमेरिका से भारत 3.46 लाख करोड़ रुपये का आयात करता है, जिसमें कच्चा तेल, कोयला, हीरे, विमान व अंतरिक्षयानों के पुर्जे शामिल हैं।

लेकिन यहाँ चिंता की बात यह है कि चीन, वियतनाम, बाँग्लादेश और इंडोनेशिया जैसे देशों पर अमेरिका ने इतना भारी शुल्क नहीं लगाया है, जिससे उनके उत्पाद भारतीय उत्पादों की तुलना में अमेरिकी बाजार में सस्ते पड़ेंगे। फिर भी मोदी सरकार का रवैया दृढ़ है। साठ के दशक में हम गेहूँ, दूध के लिए भी अमरीका पर निर्भर थे, लेकिन लगता है ट्रंप ने उन दिनों लिखी गई कोई किताब ताजा मानकर पढ़ ली है। उन्हें आज भी पुराना भारत दिख रहा है, जिसे वह झुकाने की सोच रहे हैं। उन्हें यह समझ में आ जाना चाहिए कि अब भारत पहले वाला भारत नहीं रहा है। वह आत्मनिर्भर एवं विश्व में तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है। भारत का पूरे विश्व में दबदबा बढ़ रहा है।

उद्योग जगत भी इस दबाव को एक अवसर के रूप में देख रहा है। उद्योगपति हर्ष गोयनका का कहना है कि अमेरिका निर्यात पर टैरिफ लगा सकता है, लेकिन हमारी संप्रभुता पर नहीं। आनंद महिंद्रा ने तो यह भी कहा कि जैसे 1991 के विदेशी मुद्रा संकट ने

उदारीकरण की राह खोली थी, वैसे ही यह टैरिफ संकट भी हमें आत्मनिर्भरता की दिशा में गति दे सकता है। ललित मोदी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए ट्रंप को 2023 की उस रिपोर्ट की याद दिलाई है, जो अमेरिका की कंपनी गोल्डमैन सैक्स ने ही जारी की थी। गौरतलब है कि गोल्डमैन सैक्स ने इस रिपोर्ट में कहा था कि भारत 2075 तक दुनियाँ की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, जो न केवल जापान और जर्मनी, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका को भी पीछे छोड़ देगा। रिपोर्ट में अनुमान है कि 2075 तक भारत की जीडीपी 52.5 ट्रिलियन डॉलर होगी, जो चीन के 57 ट्रिलियन डॉलर से कम लेकिन अमेरिका के 51.5 ट्रिलियन डॉलर से अधिक होगी। वर्तमान में भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और तेजी से आगे बढ़ रही है।

अमेरिका की आर्थिक दादागिरी कोई नई बात नहीं है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद से ही वह वैश्विक आर्थिक नीतियों में अपनी शर्तें थोपता आया है, लेकिन अब हालात बदल रहे हैं। चीन पहले ही उसके दबाव में नहीं आ रहा और अब भारत भी साफ संकेत दे रहा है कि उसकी प्राथमिकता अपने राष्ट्रीय हित हैं। हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत–पाक युद्ध रोकने का श्रेय लेने की अमेरिकी कोशिश को भारत ने सिरे से खारिज कर दिया। यही रुख अब टैरिफ विवाद में भी नजर आ रहा है। मोदी सरकार का लक्ष्य स्पष्ट है मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल और इंडिया फर्स्ट जैसी नीतियों के जरिये 2047 तक भारत को दुनियाँ की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना। ऐसे में ट्रंप की टैरिफ राजनीति भारत के आत्मनिर्भरता अभियान को और तेज कर सकती है।

धैर्य और संयम के साथ नेतृत्व करना भारत की ताकत है। रामचरितमानस का वह प्रसंग याद आता है, जब विभीषण ने युद्ध के समय श्रीराम से कहा कि रावण के पास सब कुछ है, पर आपके पास कुछ नहीं। तब श्रीराम ने उत्तर दिया कि सबसे बड़ी शक्ति धैर्य, शांति और सहनशीलता है। यही नीति आज भारत के नेतृत्व में झलक रही है,

जहाँ ट्रंप अभिमान में हैं, वहीं भारत दृढ़ता और शांति के साथ आगे बढ़ रहा है। इतिहास ने साबित किया है कि अमेरिका कभी भी भारत का स्थायी मित्र नहीं रहा। ट्रंप की नीतियों का विरोध अमेरिका के भीतर भी हो रहा है। ऐसे में बदलते समीकरण भारत के लिए नए अवसर खोल सकते हैं। ट्रंप भले ही मनमाना रवैया अपनाए हुए हैं, पर वह भी फंस रहे हैं। टैरिफ के मुद्दे पर उनका अमरीका में भी विरोध हो रहा है। बदले परिदृश्य में नए वैश्विक समीकरण बनने की संभावनाएँ हैं। ट्रंप का रुख चीन के साथ भारत के संबंधों को बदल सकता है।

पीएम मोदी इस महीने के आखिर में सात सालों के बाद चीन के दौरे पर जा रहे हैं। वह वहाँ तिआनजिन में 31 अगस्त से 1 सितंबर तक आयोजित होने वाली शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एसीओ) समिट में शामिल होंगे। मोदी का यह चीन दौरा ऐसे समय में होने जा रहा है, जब दोनों देशों के रिश्तों को सुधारने की कोशिशें चल रही हैं। भारत बहुत बड़ा बाजार है, जिसकी चीन को सख्त जरूरत है। भारत में जब भी स्वदेशी का मुद्दा उठता है, तो चीन इसे अपने खिलाफ मानता है। स्वदेशी की अवधारणा का चीनी उत्पादों पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। ऐसे में चीन क्यों नहीं चाहेगा कि उसके भारत के साथ संबंध मधुर हों ? खासकर तब जब अमरीका खुद ही भारत से दूरियाँ बढ़ा रहा है। चीन को भारत के विशाल बाजार की जरूरत है और अमेरिका के साथ भारत के रिश्तों में दूरी बढ़ने से बीजिंग अपने संबंध सुधारने को उत्सुक होगा।

अमेरिका की आर्थिक दादागिरी भले ही अभी भी जारी हो, पर बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत का आत्मविश्वास, अडिग रुख और दूरदर्शी नेतृत्व इसे न सिर्फ झेलने में सक्षम है, बल्कि इसे अपने विकास की सीढ़ी भी बना सकता है। आने वाले समय में अपने हितों की रक्षा करते हुए दुनियाँ में अपनी शर्तों पर आगे बढ़ना ही भारत की असली ताकत होगी। अर्थव्यवस्था के शिखर पर पहुँचकर भी भारत वसुधैव कुटुम्बकुम के मार्ग पर चलेगा। सबका कल्याण ही भारत की सोच है। हम तो प्राचीन काल से ही सर्वे भवन्तु सुखिनः ही सोच रखते हैं। दादागिरी हमारा स्वभाव नहीं है।

(लेखक विख्यात शिक्षा विद्, विचारक, चिंतक और वक्ता हैं)
profmcguptadelhi@gmail.com

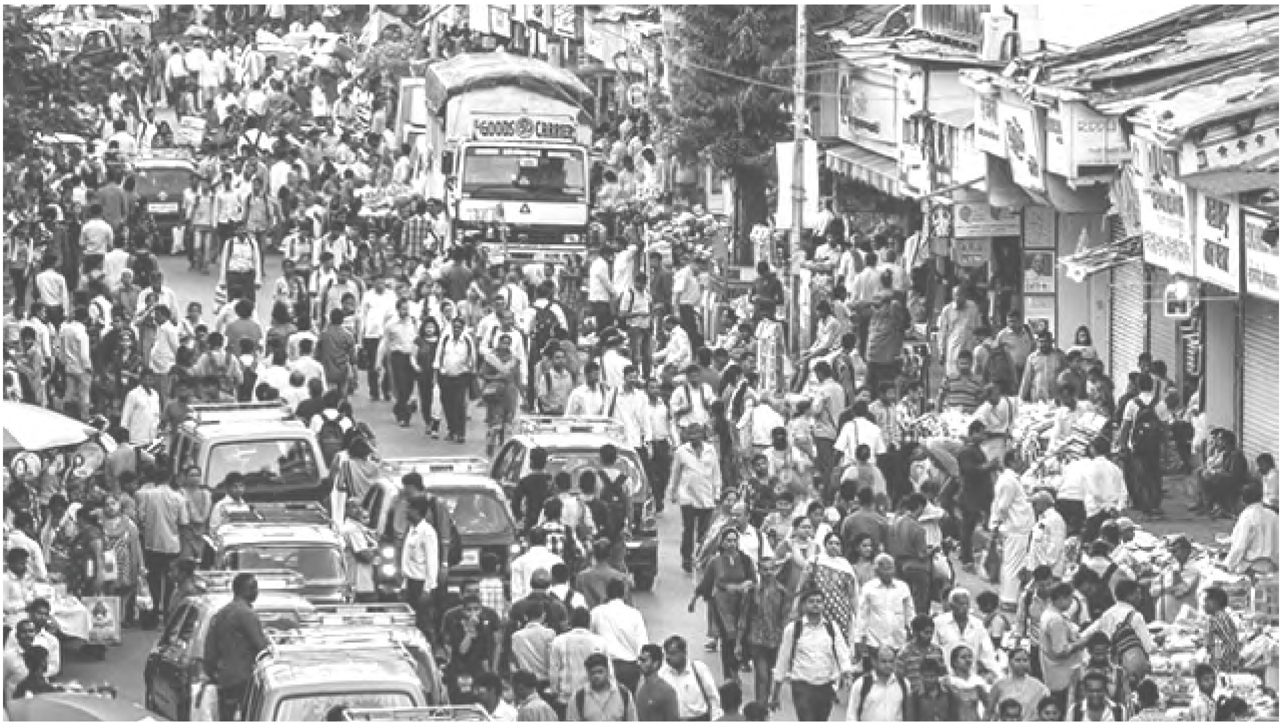

असम से पूर्वांचल तक डेमोग्राफिक चेंज
जनसँख्या की उथल-पुथल का सच

संजय सक्सेना, लखनऊ

तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन. रवि के हालिया बयान ने असम, पश्चिम बँगाल और पूर्वांचल (उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों) में पिछले कुछ दशकों में जनसाँख्यिकीय परिवर्तनों को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है। गाँधीनगर में राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने इन परिवर्तनों को एक 'टाइम बम' करार दिया, जिसने न केवल राजनीतिक हलकों में बल्कि सामाजिक और साँस्कृतिक मंचों पर भी बहस छेड़ दी है। यह बयान भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जनसाँख्यिकी, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक स्थिरता जैसे संवेदनशील मुद्दों को उजागर करता है। राज्यपाल के टाइम बम वाले बयान के निहितार्थ, इसके ऐतिहासिक संदर्भ और इसके सामाजिक, राजनीतिक और साँस्कृतिक प्रभावों पर गहराई से विचार करने पर भविष्य में डेमोग्राफिक चेंज को लेकर कई गंभीर चुनौतियाँ नजर आती हैं।

वस्तुतः भारत की जनसाँख्यिकी हमेशा से एक जटिल और गतिशील विषय रही है। असम, पश्चिम बँगाल और पूर्वांचल जैसे क्षेत्रों में जनसँख्या की संरचना में बदलाव का इतिहास लंबा और बहुआयामी है। इन क्षेत्रों में जनसाँख्यिकीय परिवर्तन मुख्य रूप से प्रवास, आर्थिक गतिविधियों और साँस्कृतिक कारकों से प्रभावित हुए हैं। उदाहरण के लिए असम में 19वीं सदी से ही बंगाल और बाँग्लादेश (पूर्वी पाकिस्तान) से प्रवास का लंबा इतिहास रहा है। ब्रिटिश शासनकाल में चाय बागानों के लिए श्रमिकों को लाया गया, जिसने असम की जनसाँख्यिकी को प्रभावित किया।

स्वतंत्रता के बाद विशेष रूप से 1971 के बाँग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान, बड़े पैमाने पर प्रवास ने इस क्षेत्र की साँस्कृतिक और धार्मिक संरचना को बदल दिया। पश्चिम बंगाल में भी सीमा पार से प्रवास और शहरीकरण ने जनसाँख्यिकी को प्रभावित किया है। पूर्वांचल में आर्थिक अवसरों की कमी और बेहतर रोजगार की तलाश में अन्य क्षेत्रों से प्रवास ने जनसँख्या की गतिशीलता को बढ़ाया है। राज्यपाल का यह बयान कि क्या कोई भविष्यवाणी कर सकता है कि अगले 50 वर्षों में इन क्षेत्रों में 'राष्ट्र विभाजन' नहीं होगा, एक गंभीर चेतावनी है। यह 1947 के भारत विभाजन की याद दिलाता है, जब धार्मिक और साँस्कृतिक आधार पर देश का बंटवारा हुआ था। उनके शब्दों में निहित है एक डर कि जनसांख्यिकीय परिवर्तन सामाजिक ताने–बाने को कमजोर कर सकते हैं और क्षेत्रीय या सांप्रदायिक तनाव को बढ़ा सकते हैं। हालांकि इस बयान ने विवाद भी खड़ा किया है, क्योंकि यह एक विशेष विचारधारा को बढ़ावा देने के रूप में देखा जा सकता है। कुछ आलोचकों का मानना है कि यह बयान उन क्षेत्रों में रहने वाली विभिन्न समुदायों के बीच अविश्वास को बढ़ा सकता है, खासकर जब इसे राष्ट्रीय एकता के विपरीत देखा जाता है।

इन क्षेत्रों में जनसांख्यिकीय बदलावों की चिंता केवल सांख्यिकी तक

सीमित नहीं है। यह साँस्कृतिक पहचान, भाषाई विविधता और सामाजिक एकता जैसे गहरे मुद्दों से जुड़ा है। इसी के चलते असम में असमिया पहचान की रक्षा के लिए लंबे समय से आंदोलन चल रहे हैं, जैसे कि असम आंदोलन (1979–1985) जो अवैध प्रवास के खिलाफ था। इसी तरह से पश्चिम बंगाल में, बंगाली सँस्कृति और भाषा की प्रमुखता को बनाए रखने की चिंता समय–समय पर उठती रही है। पूर्वांचल में हिंदी भाषी आबादी और अन्य समुदायों के बीच साँस्कृतिक और आर्थिक टकराव देखा गया है। इन सभी क्षेत्रों में जनसाँख्यिकीय परिवर्तन को अक्सर स्थानीय समुदायों द्वारा अपनी पहचान और संसाधनों पर खतरे के रूप में देखा जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि तमिलनाडु राज्यपाल का यह बयान राजनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। तमिलनाडु में जहाँ द्रविड़ विचारधारा का प्रभाव रहा है, राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय स्वायत्तता के बीच तनाव समय–समय पर देखा गया है। आर.एन. रवि का यह बयान जो पहले से ही राज्य सरकार के साथ कुछ मुद्दों पर मतभेदों के लिए चर्चा में रहे हैं, इसे एक राष्ट्रीयवादी दृष्टिकोण के रूप में देखा जा सकता है। उनके शब्दों में 'वन नेशन, वन लैंग्वेज' जैसी विचारधारा का संकेत मिलता है, जो तमिलनाडु जैसे भाषाई और साँस्कृतिक रूप से संवेदनशील राज्य में विवादास्पद हो सकता है। यह बयान उन क्षेत्रों में भी तनाव पैदा कर सकता है, जहाँ पहले से ही सांप्रदायिक या क्षेत्रीय संवेदनशीलता मौजूद है।

इसके अलावा जनसांख्यिकीय परिवर्तनों का मुद्दा सामाजिक और आर्थिक नीतियों से भी जुड़ा है। इन क्षेत्रों में संसाधनों का असमान वितरण, बेरोजगारी, और शिक्षा तक सीमित पहुँच जैसे कारक प्रवास को बढ़ावा देते हैं। यदि सरकारें इन मुद्दों को संबोधित करने में विफल रहती हैं, तो सामाजिक तनाव और बढ़ सकता है। उदाहरण के लिए असम में अवैध प्रवास को रोकने के लिए राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) जैसे कदम उठाए गए हैं, लेकिन इनके कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ सामने आई हैं। पश्चिम बँगाल में प्रवास से संबंधित नीतियाँ अक्सर राजनीतिक दलों के बीच विवाद का कारण बनती हैं।

इस बयान का एक और पहलू है, इसका भविष्य पर प्रभाव। राज्यपाल ने अगले 50 वर्षों में 'राष्ट्र विभाजन' की आशंका जताई है, जो एक गंभीर चेतावनी है। हालांकि यह भी महत्वपूर्ण है कि इस तरह की चेतावनियों को सावधानीपूर्वक संभाला जाए, ताकि सामाजिक सौहार्द बिगड़े नहीं। भारत की ताकत उसकी विविधता में निहित है और जन–जन को मजबूत करने के लिए समावेशी नीतियों की आवश्यकता है। शिक्षा, रोजगार और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने वाली नीतियाँ इन चिंताओं को कम कर सकती हैं।

अंत में आर.एन. रवि का बयान एक गंभीर मुद्दे को उजागर करता है, लेकिन इसे संबोधित करने के लिए एक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जनसाँख्यिकीय परिवर्तन एक वास्तविकता है, लेकिन इसे 'टाइम बम' के रूप में देखने के बजाय, इसे समझने और प्रबंधन करने की जरूरत है। भारत जैसे देश में जहाँ विविधता इसकी सबसे बड़ी ताकत है, सामाजिक एकता और राष्ट्रीय एकीकरण को बनाए रखने के लिए संवाद और सहयोग आवश्यक है।

skslko28@gmail.com

साहिबाबाद मंडी से हिन्दू व्यापारी कहाँ विलुप्त हो गए

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

साहिबाबाद में जो गोली चली वह जांच का विषय है। मंडी में किन लोगों के पास वैध और किनके पास अवैध हथियार हैं, यह भी जांच का विषय है। मंडी में जिन फल व्यापारियों के पास सब्जी एवं फल विक्रय करने का लाइसेंस है, क्या वह सभी मानकों का पालन कर रहे हैं? यह भी जाँच का विषय है, लेकिन इन सबसे अलग सब्जी और फल मंडियों की स्थिति का अवलोकन भी करना चाहिए। मंडी से धीमे–धीमे सभी हिन्दू व्यापारियों का व्यापार समाप्त हो जाना, मंडियों में मजहबी समाज का एकाधिकार होना, जरा–जरा सी बात पर ग्राहकों से अभद्र भाषा का उपयोग करना, यहाँ तक कि यदि ग्राहक महिला हो, तो भी शर्म न करना, चलते फिरते फब्तियाँ कसना, क्या यह सब उचित है? क्या कारण है कि हिन्दू व्यापारियों को साहिबाबाद सब्जी मंडी से पलायन करना पड़ा? अनेक प्रकार की असभ्य घटनाएँ साहिबाबाद मंडी में होती रहती हैं, पर न तो यह बात चर्चा का विषय बनती है और न ही इन पर कोई कार्यवाही होती है। ठेकेदार प्रथा की ताकत इतनी कि चाहे कितना ही बड़ा झगड़ा मंडी के व्यापारियों द्वारा कर लिया जाय, पर, उन्हें अपने संरक्षक पर पूरा विश्वास रहता है कि उन पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं होगी और होता भी ऐसा ही है। अब फल, सब्जी जैसे आवश्यक वस्तुओं पर इस प्रकार का मजहबी समाज का एकल कब्जा समान्य नागरिक के लिए तो पीड़ादायक है ही, सत्य कहिये तो, जो जागरूक और सभ्य समाज का व्यक्ति है, वो बढ़ती मजहबी सँख्या के आतंक के भय से मंडी जाने से भी भयभीत होता है। अब इसका समाधान संवैधानिक रूप से होगा, या आक्रोशित जनता के प्रतिकार से, यह तो भविष्य पर ही निर्भर है। सुनने में तो यहाँ तक भी आता है कि मंडी में जिस स्थान पर मस्जिद बनी है, वह जमीन मंडी की सरकारी जमीन है। यदि ऐसा है, तो गंभीर और चिंताजनक है कि सरकारी संसाधनों पर मजहबी कब्जा किसके संरक्षण में हो रहा है? divyelekh@gmail.com

मृत्युंजय दीक्षित

भगवा आतंकवाद की मनगढ़न्त कहानी ध्वस्त

मालेगांव बम धमाके के सभी आरोपी निर्दोष सिद्ध हुए
हिन्दू या भगवा कभी आतंकवादी नहीं हो सकता

2004 से 2014 के मध्य पूरा भारत आतंकवाद से त्रस्त था। आए दिन होने वाले आतंकी बम धमाकों ने देश की जनता को भयभीत कर रखा था। ऐसे ही बम धमाकों की श्रृंखला में महाराष्ट्र के मालेगांव में 29 सितंबर 2008 को हुए बम धमाकों में कम से कम छह लोग मारे गए थे और 100 से अधिक लोग घायल हुए थे। 17 वर्षों के बाद मालेगांव की घटना की आम और खास लोगों में चर्चा का एक विशिष्ट प्रयोजन है। तत्कालीन केन्द्र की काँग्रेस सरकार मुस्लिम तुष्टिकरण की सारी हदें पार करते हुए जहाँ एक ओर पाक प्रायोजित आतंकवाद पर ढुलमुल रवैया अपनाए रही, वहीं दूसरी ओर मालेगांव बम विस्फोट पर 'हिन्दू आतंकवाद' का एक काल्पनिक कथानक रचकर उसे खूब प्रचारित और प्रसारित करने का भी प्रयास किया। बिना किसी सबूत और बिना किसी जांच के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा अन्य हिन्दू संगठनों से जुड़े कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया, जिनमें साध्वी प्रज्ञा ठाकुर, लेफ्टीनेंट कर्नल पुरोहित, रिटायर्ड मेजर रमेश उपाध्याय, समीर कुलकर्णी, अजय रहीरकर, सुधाकर द्विवेदी और सुधाकर चतुर्वेदी प्रमुख हैं। सत्रह वर्षों बाद नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी की विशेष न्यायालय ने 31 जुलाई 2025 को सभी सातों आरोपियों को ठोस सबूतों के अभाव में दोषमुक्त घोषित करते हुए बरी कर दिया। मुस्लिम तुष्टिकरण और वोट बैंक की राजनीति करने वाले हिन्दू, सनातन विरोधी काँग्रेस और उसके सहयोगी दलों की भगवा आतंकवाद की पूरी थ्योरी न्यायपालिका के प्रथम चरण में ध्वस्त हो गई है। अब न्यायालय के निर्णय पर राजनीति होना स्वाभाविक गतिविधि है।

विशेष अदालत के फैसले ने इस तथ्य को पुनः प्रमाणित कर दिया है कि एक हिन्दू अथवा सनातनी कभी भी आतंकी नहीं हो सकता। यह फैसला बहुसँख्यक हिन्दू समाज तथा संत समाज को आनंदित करने वाला है, वहीं काँग्रेस के नेतृत्व वाला समूचा विपक्ष आज उसी तरह से रो रहा है, जिस प्रकार वे अयोध्या में बाबरी विध्वंस के समय रोए थे। यह वही मुकदमा है, जिसके आधार पर तत्कालीन काँग्रेस सरकार ने भगवा आतंकवाद का एक पूर्णतः असत्य कथानक रचा और पूरे विश्व में सनातन धर्म को अपमानित करने की कोशिश की। साध्वी प्रज्ञा सहित सभी सात आरोपियों को एक नितान्त मनगढ़ंत आरोपों से अपनी असंबद्धता सिद्ध करने के लिए 17 वर्षों तक न केवल कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी अपितु सतत् मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना भी झेलनी पड़ी थी। एक महिला होने के नाते सर्वाधिक अत्याचार व अपमान साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को 9 साल जेल में रहते हुए सहना पड़ा था।

प्रज्ञा ठाकुर का संत से संसद तक का सफर – मध्य प्रदेश की भगवाधारी महिला संत प्रज्ञा सिंह ठाकुर को महाराष्ट्र एटीएस ने गिरफ्तार कर उन्हें आतंकवादी बताया था; लेकिन इन्हीं आरोपों को अवसर में बदलते हुए वह भोपाल से भाजपा की सांसद चुनी गई। जेल में रहते हुए उन पर 10 दिनों तक अपना अपराध स्वीकार करने सहित साजिशकर्ताओं के नाम बताने के नाम पर अथाह अत्याचार किए गए, जिस कारण उनका स्वास्थ्य भी बिगड गया था; किंतु प्रज्ञा ठाकुर जी ने अपना धैर्य, साहस व मनोबल नहीं खोया। सभी आरोपी बराबर कहते रहे थे कि यह एक साजिश है और उन सभी को फंसाया जा रहा है। उन सभी के साहस और धैर्य ने हिन्दू–भगवा को आतंकवाद के अनर्गल आरोप से मुक्त करा दिया है।

अब आज जाकर साध्वी प्रज्ञा ठाकुर व सभी सात अन्य आरोपी पूर्ण रूप से स्वतंत्र हुए हैं, हालांकि अभी पीड़ित परिवारों के वकील का कहना है कि वह सभी लोग मामले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगे, वहीं कुछ मुस्लिम परस्ती की राजनीति करने वाले लोग इस मामले में जनहित याचिका भी डालने जा रहे हैं, किंतु महाराष्ट्र सरकार की ओर से स्पष्ट कर दिया गया है कि फिलहाल वह इस मामले को ऊपरी अदालत में नहीं ले जाएगी। वहीं काँग्रेस सहित मुस्लिम संगठन महाराष्ट्र सरकार की नीतियों की आलोचना करते हुए कह रहे हैं कि जिस प्रकार वह त्वरित गति से मुंबई ट्रेन धमाकों के मामले को ऊपरी अदालत में लेकर चली गई, इसी प्रकार उसे इस फैसले में भी करना चाहिए।

किंतु यहाँ पर सबसे बड़ा प्रश्न यह भी है कि इन सभी अरोपियों के जो 17 बहुमूल्य वर्ष व समय खराब हुए हैं, उसकी भरपाई कौन और कैसे करेगा? यह जानना भी आवश्यक है कि भगवा आतंकवाद की थ्योरी का जनक आखिर है कौन और इससे किसको लाभ होने वाला था? किसने इन सभी लोगों को आरोपी बनाने की कहानियाँ गढ़ीं ? क्या अब उन सभी को न्यायपालिका, जांच एजेंसियों के कठघरे में खड़ा किया जाएगा? आखिर कौन है जो हिन्दुओं व भगवा को बदनाम करने के लिए साजिशें रच रहा था और फिर सबसे विशेष मालेगांव व समझौता एक्सप्रेस जैसे बम धमाके करवाने व फिर उन सभी तमाम घटनाओं में साधु–संतों को गिरफ्तार करने की साजिशें कौन रच रहा था? निश्चित रूप से उस समय काँग्रेस केंद्र की सत्ता में थी और महाराष्ट्र में काँग्रेस –एनसीपी की सरकार थी। जब यह घटना घटी थी, उस समय महाराष्ट्र में एनसीपी के आर. आर. पाटिल गृहमंत्री थे और केंद्र में काँग्रेस के गृहमंत्री शिवराज पाटिल थे।

महाराष्ट्र के वर्तमान मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कोर्ट का फैसला आने के बाद कहा कि भगवा आतंकवाद का झूठा नैरेटिव गढ़ने के लिए अब काँग्रेस को देश से माफी मांगनी चाहिए। भगवा आतंकवाद की थ्योरी का जन्मदाता एनसीपी नेता शरद पवार को ही माना जा रहा है और उनकी इस नीति को गृहमंत्री शिवराज पाटिल के बाद सुशील कुमार शिंदे, मध्य प्रदेश काँग्रेस के नेता दिग्विजय सिंह व कमलनाथ और फिर उसके बाद गृहमंत्री पी. चिदम्बरम ने ही पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ाया। कोर्ट के फैसले से साफ हो गया है कि कुछ लोगों ने अपने निजी और राजनीतिक स्वार्थ के कारण भगवा आतंकवद के झूठे मुददे को अपनी विकृत राजनीति का हथियार बनाया और पूरे हिंदू समुदाय और हिंदू धर्म को आतंकवाद से जोड़ने की नाकाम कोशिश की गई और अब इन सभी साजिशों की परत–दर–परत उखड़ने लग गई है।

इससे पूर्व समझौता एक्सप्रेस बम धमाके की साजिश रचने के आरोप में स्वामी असीमानंद महाराज भी बरी हो चुके हैं। इस प्रकार यह दूसरा बड़ा अवसर है, जब काँग्रेस की भगवा आतंकवाद की थ्योरी कोर्ट में ध्वस्त हो गई है। कोर्ट का फैसला आते ही हिंदू संगठनों में आनंद व उत्साह का वातावरण देखा गया तथा सभी ने पटाखे दागकर व एक–दूसरे को मिठाई खिलाकर विजय का उत्सव मनाया।

कोर्ट की अहम टिप्पणियाँ – इस पूरे प्रकरण में अपने अंतिम फैसले में कोर्ट ने कई ऐतिहासिक व गंभीर टिप्पिणयाँ करते हुए कहा कि 'आतंकवाद का कोई रंग या धर्म नहीं होता। कोर्ट ने माना है कि कई लोगों के बयान उन्हें प्रताड़ित करके लिए गए हैं।'

कोर्ट का फैसला आने के बाद अब हिंदू संगठनों की ओर से पी. चिदम्बरम, दिग्विजय सिंह सहित उन सभी लोगों पर कार्यवाही करने की मांग की जा रही है, जो सनातन को बदनाम करने के लिए भगवा आतंकवाद की झूठी साजिश रच रहे थे। निश्चय ही हिंदू आतंकवाद का नैरेटिव एक राजनीतिक साजिश है, इसका उद्देश्य इस्लामी आतंकियों को खुश करना और वोट बैंक को मजबूत करते रहना है। यही कारण है कि

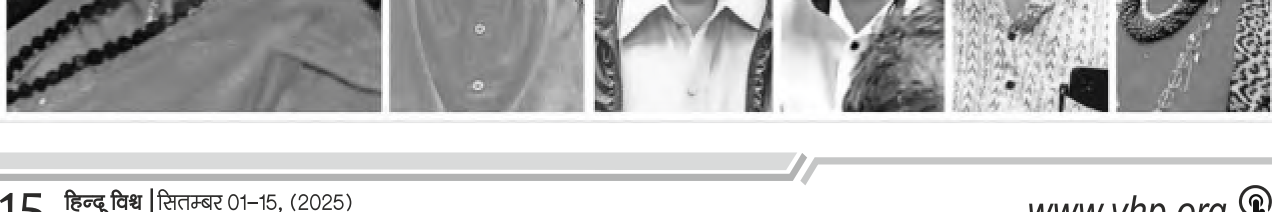

काँग्रेसराज में हिंदुओं को डराने–धमकाने के लिए बम धमाके होते रहते थे और मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली सरकार भगवा आतंकवाद का झूठा नैरेटिव गढ़ा करती थी। आज पूरे भारत से काँग्रेस का सफाया हो रहा है। भगवा आतंकवाद के जनक तिलमिलाए हुए हैं। यही कारण है कि जब आज सरकार आतंकी ठिकानों पर चुन–चुनकर कार्यवाही करती है, तब सेना व सरकार से यह विरोधी दल सबूत मांगने लगते हैं।

अब होने लगे खतरनाक खुलासे – मालेगांव पर कोर्ट का फैसला आने के बाद उस समय रची गई साजिश भी बेनकाब होने लगी है और पूर्व अधिकारी तक टी.वी. चैनलों पर आकर हिंदू धर्म को बदनाम करने के लिए रची गई साजिश का खुलासा करने लगे हैं। उस समय इस मामले में संघ के कुछ बड़े नेताओं को भी फंसाने की मंशा थीं, जिसमें इंद्रेश कुमार का नाम सबसे चर्चित था। मालेगांव विस्फोट कांड की जांच करने वाली टीम के एक सदस्य महबूब मुजावर ने खुलासा किया है कि उस समय एनआईए के एक अधिकारी ने वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत को गिरफ्तार करने के लिए बहुत बड़ा दबाव बनाया था। अंततः उन्हें अपनी नौकरी से भी समय पूर्व ही हाथ धोना पड़ गया था। मुजावर कहते हैं कि

> **मालेगांव विस्फोट कांड की जांच करने वाली टीम के एक सदस्य महबूब मुजावर ने खुलासा किया है कि उस समय एनआईए के एक अधिकारी ने वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत को गिरफ्तार करने के लिए बहुत बड़ा ढबाव बनाया था। अंततः उन्हें अपनी नौकरी से भी समय पूर्व ही हाथ धोना पड़ गया था। मुजावर कहते हैं कि रामजी कालसंगरा और संदीप डांगे की जगह साध्वी प्रज्ञा ठाकुर और लेफ्टिनेंट कर्नल पुरोहित का नाम डालकर एक फर्जी जांच शुरू की गई।**

रामजी कालसंगरा और संदीप डांगे की जगह साध्वी प्रज्ञा ठाकुर और लेफ्टिनेंट कर्नल पुरोहित का नाम डालकर एक फर्जी जांच शुरू की गई। उन्होंने कहा कि एक "गलत व्यक्ति" के द्वारा की गई गलत जांच का परिणाम आज सामने आ गया है। इस मामले में तो यू पी के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी फंसाने की साजिश रची गई थी। वह तो भला हो कि इस पूरे झूठे प्रकरण में सभी गवाह धीरे–धीरे मुकरते चले गए।

महाराष्ट्र के मालेगांव में हुआ बम धमाका एक सुनियोजित राजनीतिक साजिश का एक बहुत ही बड़ा और घटिया हिस्सा था, जो अब धीरे–धीरे ही सही लगातार बेनकाब होता जा रहा है और सेकुलर ताकतें भी उसी प्रकार से बेनकाब होती जा रही हैं। काँग्रेस नेता राहुल गाँधी ने आजकल हिंदू धर्म बनाम हिंदुत्व का नारा दिया है और उसकी आड़ में वह सनातन हिन्दू सँस्कृति पर चोट पहुँचा रहे हैं। लेकिन अब यह साफ हो गया है कि राहुल गाँधी एक बहुत ही सुनियोजित साजिश के तहत ही हिंदू धर्म बनाम हिंदुत्व का मुददा उठा रहे थे। राहुल गाँधी कई बार हिंदू विरोधी बयानबाजी कर चुके हैं। एक खोजी पत्रकारिता करने वाली सँस्था विकीलिक्स में दिए इंटरव्यू में उन्होंने मुस्लिम कट्टरपंथ की तुलना में हिंदू संगठनों को हिन्दुत्व के उभार का सबसे बड़ा खतरा बताया था। यह वही राहुल गाँधी हैं, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना मुस्लिम ब्रदरहुड से कर चुके हैं।

स्पष्ट है कि राहुल गाँधी के नेतृत्व वाला इंडी गठबंधन पूरी तरह से हिंदू विरोधी है और सनातन के उन्मूलन में लगातार लगा रहता है, लेकिन यह लोग भूल जाते हैं कि जो सनातन है, वो शाश्वत भी है और कभी समाप्त नहीं हो सकता।

वात्सल्य वाटिका बहादराबाद में रक्षाबंधन पर्व हर्षोल्लास से सम्पन्न

बहादराबाद हरिद्वार। विश्व हिन्दू परिषद की मातृशक्ति एवं दुर्गा वाहिनी की बहनों द्वारा वात्सल्य वाटिका, बहादराबाद में रक्षाबंधन का पावन पर्व बड़े ही हर्षोल्लास एवं आत्मीय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम में बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा और मिष्ठान खिलाकर प्रेमपूर्वक उपहार भेंट किए।

रक्षाबंधन के अवसर पर परिवार से दूर रह रहे बच्चों को बहनों के स्नेह व ममत्व का भाव प्राप्त हुआ। विश्व हिन्दू परिषद मातृशक्ति की प्रांत संयोजिका श्रीमती नीता कपूर ने रक्षाबंधन पर्व की परंपरा, महत्व एवं इसके सामाजिक–साँस्कृतिक संदेश पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही श्रीमती नीता नायर ने रक्षाबंधन को भारतीय सँस्कृति का बंधुत्व एवं आत्मीयता का प्रतीक बताते हुए समापन उद्‌बोधन दिया। अतिथि के रूप में पधारीं बबीता योगाचार्य तथा दुर्गावाहिनी की बहनों ने बच्चों के साथ यह पर्व मनाया। कार्यक्रम का संयोजन मानसी भार्गव ने किया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा संचालित संस्कार शाला 'वात्सल्य वाटिका' के बच्चे एवं संगठन के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे, जिन्होंने मिलकर इस पर्व को अविस्मरणीय बना दिया।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

ध्वस्त हुआ एक और झूठ नैरेटिव

सुरेश हिंदुस्तानी

भारत में स्वार्थी राजनीति का खेल यूँ तो बहुत पुराना है, लेकिन ऐसी राजनीति जनमानस को केवल भ्रमित करने का काम ही करती है। यह भी सत्य है कि इसका प्रभाव लम्बे समय तक नहीं रहता। राजनीति सच की होना चाहिए, न कि झूठ की। लेकिन आज विसंगति यह है कि राजनीतिक दल केवल अपने लिए ही राजनीति करते हैं, देश के लिए नहीं। आज राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करने तक सीमित हो गया है। ऐसी ही राजनीति के माध्यम से हिन्दू आतंकवाद की थ्योरी स्थापित करने का खेल खेला गया। अब इस षड्यंत्र की परतें भी उधड़ने लगी हैं, जिसके फलस्वरूप फेक नैरेटिव का पर्दाफाश हो गया।

भारत क्या है और उसकी विरासत क्या है? इसके मूल में जो प्रमाण मिलते हैं, वह उसका एक दर्शन है। यह दर्शन मात्र कुछ वर्षों का कार्य नहीं, बल्कि एक लम्बी साधना के बाद निकला है। जो भारतीय समाज के लिए एक प्रेरणीय पाथेय है, लेकिन लम्बे समय से इस आदर्श विरासत को मिटाने का कुचक्र भी चल रहा है। हम यह भली–भांति जानते हैं कि जब–जब भारतीय समाज विघटित हुआ है, तब–तब भारत को कमजोर करने के सुनियोजित प्रयास भी किए गए हैं। देश विघातक शक्तियों ने भारत के समाज में फूट डालकर अपने मंसूबों को सफल किया, ऐसे प्रयास आज भी हो रहे हैं। मूल समस्या पर किसी प्रकार का कोई चिंतन नहीं हो रहा है और न ही उस दिशा में कोई प्रयास ही हो रहा है।

अभी–अभी न्यायालय ने मालेगाँव विस्फोट मामले में एक ऐतिहासिक निर्णय दिया है, जिसमें हिन्दू आतंकवाद के नैरेटिव को ध्वस्त किया गया। इस नैरेटिव की भूमिका पूरी तरह से आधारहीन ही थी। न्यायालय के निर्णय से यह ज्ञात हुआ कि इसमें जिनको आरोपी बनाया गया, उनके विरोध में पर्याप्त प्रमाण नहीं थे, जब प्रमाण ही नहीं थे, तब इस मामले में गिरफ्तार करने की जल्दबाजी किसके संकेत पर की गई ? यह बहुत बड़ा षड़यंत्र ही था, जिसकी कलई धीरे–धीरे खुलने लगी है। एक पूर्व अधिकारी का बयान इसकी पुष्टि करने के लिए पर्याप्त माना जा सकता है। हिन्दू समाज को बदनाम करने का यह षड्यंत्र केवल एक वर्ग को खुश करने का प्रयास मात्र ही था। राजनीतिक दलों को हमेशा अपने स्वार्थ के लिए ही राजनीति नहीं करना चाहिए। राजनीति मात्र देश को शक्तिशाली और समाज को संगठित करने के लिए होना चाहिए। यहाँ एक सवाल खड़ा करना मुझे बहुत आवश्यक लग रहा है कि क्या देश के लिए काम करने की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही होती है ? या विपक्ष और समाज की भी होती है ? अगर सभी एक भाव से समाज को एक करने का कार्य करें, तो भारत का सूर्य केवल भारत को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को आलोकित करेगा, यह तय है।

मालेगाँव विस्फोट मामले में षड्यंत्र का आरम्भ किसने किया? इस सवाल का उत्तर पहले से वातावरण में तैर रहा था। काँग्रेस के बड़े नेताओं ने हिन्दू आतंकवाद की झूठी कहानी की पटकथा तैयार की। अब प्रश्न यह उठता है कि रामराज्य की संकल्पना को जमीन पर उतारने का सपना देखने वाले महात्मा गाँधी के नाम पर राजनीति करने वाली काँग्रेस के सामने ऐसी क्या मजबूरी थी कि उसने हिन्दू आतंकवाद का प्रपंच रचा? इसका पहला कारण तो यही समझ में आता है कि यह सब एक विशेष वर्ग को खुश करने का प्रयास मात्र ही था। काँग्रेस की ऐसी राजनीति करने वाले एक प्रकार से काँग्रेस को ही कमजोर करने का काम कर रहे हैं। हमें

यह भी याद होगा कि एक बार कॉंग्रेस की सरकार के समय भगवान श्रीराम के अस्तित्व को नकारने का प्रयास किया गया। उस समय हिन्दू समाज की जागृति के समक्ष कॉंग्रेस को झुकना पड़ा और सरकारी स्तर पर किए गए प्रयास पर पूरी तरह से पानी फिर गया।

मालेगॉंव विस्फोट मामले में भी ऐसा ही प्रयास किया गया। इसका एक कारण कॉंग्रेस की वह मानसिकता है, जिसके अन्तर्गत कॉंग्रेस को नेतृत्व देने वाले राजनेता केवल यही सोचते हैं कि हम तो सरकार चलाने के लिए ही बने हैं। आज भी कॉंग्रेस के नेता इसी भावना के साथ विचार रखते हैं। उन्हें यह लगता ही नहीं है कि देश में अब कॉंग्रेस की सरकार नहीं है और देश में राजनीतिक परिवर्तन हो चुका है। कॉंग्रेस को यह आत्म मंथन करना चाहिए कि देश की जनता क्या चाहती है ? क्योंकि जनता ने ही कॉंग्रेस को सत्ता से बेदखल किया है। भारत का लोकतंत्र यही कहता है कि देश में जनता का शासन है। जनता का शासन मतलब किसी दल की सरकार नहीं, वह जनता की सरकार है, लेकिन हमारे राजनीतिक दल इसको राजनीतिक दल की सरकार मानकर व्यवहार करते हैं। कॉंग्रेस को यह समझना चाहिए कि जब जनता की सरकार है, तब सरकार का विरोध करने का अर्थ जनता का ही विरोध है। आज जनता इतनी समझदार हो चुकी है कि

उसे पल–पल की जानकारी है, इसलिए कुछ समय के लिए भ्रमित किया जा सकता है, लेकिन भ्रम से जब परदा उठता है तो इसके पीछे एक षड्यंत्र का खेल दिखाई देता है। मालेगांव मामले में कुछ बयानों को आधार बनाया जाए, तो यही कहा जा सकता है कि इसमें और भी प्रभावी व्यक्तियों को फंसाने की तैयारी भी हो रही थी, इसकी भूमिका भी बन चुकी थी, लेकिन कॉंग्रेस का यह सपना इसलिए पूरा नहीं हो सका, क्योंकि जिनको आरोपी बनाया गया, उन्होंने प्रताड़ना सहने के बाद भी उनके मन मुताबिक बयान नहीं दिए। यहॉं एक और बात का उल्लेख करना बहुत आवश्यक हो जाता है कि कॉंग्रेस के नेता असली आतंकवाद पर बोलने से हमेशा किनारा करते हैं। इतना ही नहीं कभी–कभी तो कॉंग्रेस के नेता आतंकियों के समर्थन में सम्मानपूर्वक बात करते हैं। इनको केवल सनातन से चिढ़ है। आज जब सनातन अपने उभार पर है, तब इनकी चिंता और ज्यादा बढ़ रही है। भारत में राजनीति की दशा और दिशा क्या होना चाहिए, यह तय करने का समय आ गया है। कॉंग्रेस को इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए। दूसरी बात यह है कि भारत को भारत के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। जहॉं समाज में भेद नहीं होना चाहिए, क्योंकि भारत में जितने भी धर्म और संप्रदाय के व्यक्ति रहते हैं, वे सभी पहले भारतीय हैं, जाति–धर्म बाद की बातें हैं। इसलिए राजनीति समाज को एक सूत्र में बॉंधने की होना चाहिए, विभाजन की नहीं।

sureshhindustani1@gmail.com

झुन्झुंनू में धर्मयात्राओं पर जानेवाले लोगों का सम्मान

विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल झुन्झुनूँ द्वारा विहिप जिला मंत्री जयराज जांगिड एवं बजरंग दल जिला संयोजक सुशील प्रजापति के सानिध्य एवं मण्डावा प्रखण्ड संयोजक अंकित भीमसरिया के नेतृत्व में चार धाम यात्रा, कांवड यात्रा, सालासर यात्रा, रामदेवरा पदयात्रा, खाटूश्याम जी पदयात्रा पर जाने वाले सनातन प्रेमियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान पर सम्मानित किया गया। जयराज जांगिड ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में चल रहे कार्यक्रम पंच परिवर्तन के बारे में एवं विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना एवं उनके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और बताया कि सभी हिन्दू जातिवाद में बंटे हुए लोगों को विश्व हिन्दू परिषद् एक समान नजर से देखती है। देश में छूआछूत, नीच जाति का भेद मिटाकर समरसता का भाव पैदा करती है। जिला संयोजक सुशील प्रजापति ने सभी युवा शक्ति सप्ताहिक मिलन केन्द्र के माध्यम से एकजुट रहने के लिए प्रेरित किया एवं पूरे देश में विधर्मियों के द्वारा लव जिहाद, धर्मातरण के लिए चल रहे प्रोपेगेंडा के बारे में हिन्दू बहिनों को गॉंव–ढाणियों में जाकर उन्हे सतर्क करना एवं बलोपासना (अखाड़ा) के माध्यम से उन्हें आत्मरक्षा के लिए तैयार करने की जानकारी दी। मण्डावा प्रखण्ड बजरंग दल सहसंयोजक पंकज योगी, बलोपासना प्रमुख सुधीर पारीक की नियुक्ति की गई।

मालेगांव विस्फोट एवं भगवा पर कलंक की साजिश

ललित गर्ग

29 सितंबर 2008 को मालेगांव में हुए बम विस्फोट की न्यायिक परिणति ने एक बार फिर यह सिद्ध किया है कि कैसे सत्ता, वोट बैंक और वैचारिक पूर्वाग्रहों ने भारतीय न्याय और निष्पक्षता की नींव को झकझोर दिया। मुंबई की एनआईए कोर्ट द्वारा सातों आरोपियों–प्रज्ञा सिंह ठाकुर, लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित सहित को सबूतों के अभाव में बरी कर देना न केवल कानूनी दृष्टि से एक महत्वपूर्ण फैसला है, बल्कि यह उस 'भगवा आतंकवाद' की मिथ्या कथा पर भी करारा प्रहार है, जिसे वर्षों तक काँग्रेस ने राजनीतिक मंचों और मीडिया के जरिए प्रचारित किया था। यह काँग्रेस की फर्जी कहानी का अंत एवं सत्य की जीत का एक अमूल्य आलेख है।

अदालत का यह वक्तव्य कि 'आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, कोई भी धर्म हिंसा का समर्थन नहीं कर सकता', भारतीय सँस्कृति और न्यायशास्त्र की मूल आत्मा को पुनः जीवित करता है। यह वही भारत है, जहाँ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'अहिंसा परमो धर्मः' की गूंज होती रही है, लेकिन दुर्भाग्यवश 2008 के बाद हिंदू धर्म, हिंदुत्व और भगवा पर ऐसा कलंक मढ़ा गया, मानो वे आतंकवाद के स्रोत हों। मालेगांव विस्फोट मामले में एनआइए की विशेष अदालत उस नतीजे पर पहुँची, जिस पर बांबे हाई कोर्ट ट्रेन विस्फोट कांड की सुनवाई करते हुए पहुँचा था। ऐसा कई आतंकी घटनाओं के मामलों में हो चुका है। इससे यही पता चलता है कि कभी जांच एजेंसियाँ, कभी अदालतें और कभी दोनों अपना काम सही तरह और समय पर नहीं करतीं। जांच और फिर अदालती कार्यवाही में देरी तथा ढ़िलाई एक बड़ा रोग है। आतंक के मामलों की जांच में यह भी कोई दबी–छिपी बात नहीं कि संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ, मुस्लिम तुष्टिकरण एवं वोट बैंक बाधा बनते हैं। आतंकी घटनाओं को राजनीतिक रंग दिया जाता है। मालेगांव विस्फोट कांड में प्रज्ञा ठाकुर, सुधाकर द्विवेदी आदि की गिरफ्तारी के आधार पर हिंदू और भगवा आतंक का जुमला उछाला गया। इसका मकसद कथित भगवा आतंक को जिहादी आतंक जैसा बताना था। यह हिंदू ही नहीं, देश विरोधी साजिश भी थी। इसका लाभ पाकिस्तान को मिला, क्योंकि काँग्रेस के कई नेताओं ने समझौता एक्सप्रेस कांड पर भी एजेंसियों के सहारे भगवा आतंक की फर्जी कहानी गढ़ी।

भगवा आतंकवाद शब्द का पहली बार प्रयोग उस समय के कुछ काँग्रेसी नेताओं ने किया, जिनका उद्देश्य स्पष्ट था, वोट बैंक की तुष्टिकरण नीति, मुस्लिम समाज को डराकर एकतरफा ध्रुवीकरण और हिंदू संगठन व सनातन मूल्यों को कलंकित करना। इसका परिणाम यह हुआ कि वर्षों तक निर्दोष लोग जेल में सड़ते रहे। साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर को एक संन्यासी जीवन से घसीट कर हिरासत में लिया गया, प्रताड़ित किया गया और उनके आध्यात्मिक जीवन को ध्वस्त कर दिया गया। सवाल यह है कि जब सबूत नहीं थे, तब उन्हें जेल में रखने की जरूरत क्यों पड़ी? क्यों जांच एजेंसियों ने बेसिर–पैर की कहानियों को सच मान लिया? क्यों मीडिया ने बिना परीक्षण के 'हिंदू आतंकवाद' की ब्रेकिंग न्यूज चला दी? यह वही मानसिकता थी, जो आतंकवाद को धर्म से जोड़कर एक खास समुदाय को डराने और एक संप्रदाय को बदनाम करने में लगी थी। यह काँग्रेस का एक षडयंत्र एवं साजिश थी, जिसका अब पर्दापाश हो गया है। काँग्रेस शासित प्रांत में सत्ता का जमकर दुरुपयोग किया गया।

मुंबई से लगभग 200 किलोमीटर दूर मालेगांव शहर में एक मस्जिद के पास एक मोटर साइकिल पर बंधे विस्फोटक उपकरण में विस्फोट होने से छह लोगों की मौत हो गई थी। धमाके में 100 से अधिक लोग घायल हुए थे।

न्यायाधीश ने फैसला पढ़ते हुए कहा कि मामले को संदेह से परे साबित करने के लिए कोई विश्वसनीय और ठोस सबूत नहीं है। मामले में गैरकानूनी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के प्रावधान लागू नहीं होते। कोर्ट ने यह भी कहा कि यह साबित नहीं हुआ है कि विस्फोट में इस्तेमाल की गई मोटर साइकिल प्रज्ञा ठाकुर के नाम पर पंजीकृत थी, जैसा कि अभियोजन पक्ष ने दावा किया है। यह भी साबित नहीं हुआ है कि विस्फोट कथित तौर पर बाइक पर लगाए गए बम से हुआ था। कोर्ट ने कहा कि श्रीकांत प्रसाद पुरोहित के आवास में विस्फोटकों के भंडारण या संयोजन का कोई सबूत नहीं मिला।

इससे पहले सुबह सातों आरोपी दक्षिण मुंबई स्थित सत्र न्यायालय पहुँचे, जहाँ कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। आरोपी जमानत पर बाहर थे। मामले के आरोपियों में प्रज्ञा ठाकुर, पुरोहित मेजर (सेवानिवृत्त), रमेश उपाध्याय, अजय राहिरकर, सुधाकर द्विवेदी, सुधाकर चतुर्वेदी और समीर कुलकर्णी शामिल थे। उन सभी पर यूएपीए और भारतीय दंड संहिता तथा शस्त्र अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत आतंकवादी कृत्य करने का आरोप लगाया गया था। इस पूरे प्रकरण में न्यायपालिका की देरी और जांच एजेंसियों की लापरवाही स्वयं अदालत द्वारा उजागर की गई। अदालत ने कहा कि ना तो घटनास्थल का स्केच बनाया गया, ना फिंगरप्रिंट लिए गए, ना बम के सटीक स्रोत की पुष्टि हुई और ना ही आरोपियों के खिलाफ कोई प्रत्यक्ष प्रमाण मिला। अभियोजन पक्ष ने जिस मोटर साइकिल को बम के लिए इस्तेमाल होने की बात कही थी, वह भी प्रज्ञा ठाकुर से जुड़ी नहीं पाई गई। यह सब कुछ बताता है कि पूरा केस पूर्वाग्रहों, दुर्भावना और राजनीतिक साजिश से प्रेरित था। यदि न्याय के नाम पर निर्दोष लोगों को प्रताड़ित किया जाए तो वह केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि समस्त समाज और सँस्कृति को दंडित करने जैसा होता है। प्रश्न यह उठता है कि—तो क्या अब तक इन आरोपियों को गलत तरीके से आतंकवादी घोषित कर वर्षों तक सलाखों के पीछे रखा गया?

हिंदू धर्म और आतंकवाद—ये दो शब्द आपस में मेल नहीं खाते। सनातन सँस्कृति का मूल आधार ही शांति, सहिष्णुता और करुणा है। विश्व में यदि कोई धर्म ऐसा है, जिसने 'युद्ध नहीं, यज्ञ', 'हिंसा नहीं, अहिंसा' का मार्ग दिखाया है तो वह हिंदू धर्म ही है। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, विवेकानंद और गाँधी—इन सभी की परंपरा में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। 'भगवा आतंकवाद' एक गढ़ा गया मिथक था, जो ना केवल हिंदू समाज को कलंकित करता है, बल्कि भारत की आत्मा को भी चोट पहुँचाता है। भगवा वस्त्र तो त्याग, तपस्या और आत्मशुद्धि का प्रतीक है। उसे बम और खून से जोड़ना स्वयं भारतीयता के खिलाफ साजिश है।

इस फैसले ने जहाँ एक ओर निर्दोषों को न्याय दिया, वहीं दूसरी ओर यह देश के जनमानस को आत्ममंथन का अवसर भी देता है कि क्या हम इतनी आसानी से किसी को भी आतंकवादी घोषित कर देंगे ? क्या हम किसी राजनीतिक विचारधारा के विरोध के कारण पूरे धर्म को कटघरे में खड़ा कर देंगे ? क्या धर्म का दुरुपयोग कर वोट बैंक की राजनीति करते रहेंगे ? साध्वी प्रज्ञा ठाकुर की प्रतिक्रिया—"आज भगवा की जीत हुई है, हिंदुत्व की जीत हुई है" इस बयान में उनके दर्द एवं यथार्थ को समझने की आवश्यकता है। यह केवल एक साध्वी की व्यक्तिगत मुक्ति की खुशी नहीं, बल्कि उन करोड़ों लोगों की आवाज है, जिनके लिए भगवा आस्था और अस्मिता का प्रतीक है।

वर्षों तक मीडिया ने इस मामले को सनसनीखेज बनाकर 'हिंदू आतंकवाद' को ग्लैमराइज किया। प्राइम टाइम पर भगवा को हिंसा से जोड़ना, साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को 'संदिग्ध आतंकी' की तरह चित्रित करना और बिना न्यायिक पुष्टि के चरित्रहनन करना पत्रकारिता के मूलभूत सिद्धांतों के खिलाफ था। वहीं तथाकथित बुद्धिजीवियों एवं देश की सबसे पुरानी काँग्रेस पार्टी ने भी इस मामले में एकतरफा विचारधारा के चलते भगवा को 'खतरा' घोषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसे लोगों से अब यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि क्या आप सार्वजनिक रूप से माफी मांगेंगे ?

मालेगांव विस्फोट मामले में आया फैसला केवल न्यायिक विजय नहीं बल्कि साँस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह भारत की न्याय प्रणाली, समाज की सहिष्णुता और धर्म की शुद्धता का प्रमाण है। आज समय है जब राष्ट्र को यह समझना चाहिए कि धर्म को आतंक से जोड़ना स्वयं एक मानसिक आतंक है। सत्य को स्वीकारने का साहस कीजिए, क्योंकि न्याय तभी पूर्ण होता है जब उसमें निष्पक्षता, संवेदना और सत्य का साथ हो। यह मामला दर्शाता है कि सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पस्त या पराजित नहीं। सत्यमेव जयते—यह सत्य की जीत है, सनातन की जीत है। भगवा वस्त्रों पर लगे झूठे दाग अब धुल चुके हैं, अब समय है सँस्कृति के गौरव को फिर से स्थापित करने का।

lalitgarg11@gmail.com

करें सुबह की धूप का सेवन

सुबह उठ कर सूर्य का दर्शन करना और उसकी रोशनी का खुले बदन सेवन करना बहुत लाभकारी है। इसी बात को वैज्ञानिक या डाक्टर भी कहने लगे हैं कि यदि सुबह 15–20 मिनट सूर्य की रोशनी का सेवन कर लिया जाए, तो शरीर को दिन भर के प्रयोग हेतु विटामिन डी मिल जाता है। यही बात वेद मंत्रों में कही गई है। यही वह देवताओं का प्रसाद है, जो हमारे लिए सूर्य की किरणों को लेकर आ रही हैं। इसे विद्वान यानी कि वैज्ञानिक, डाक्टर आदि तो जानते हैं, परंतु आमजन केवल आस्थावश ही सूर्य नमस्कार और जल देना आदि क्रियाएँ करता है।

वेदों में एक मंत्र आता है उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। (यजुर्वेद) यहाँ जातवेदस् का अर्थ है, जो विद्या को जानता है, या, फिर विद्या से जो उत्पन्न है, वह जातवेदस् है। इस मंत्र में कहा गया है कि विद्वान लोग जानते हैं कि उगते हुए सूरज की किरणें हमारे लिए देवताओं का प्रसाद या वरदान लेकर आ रही हैं। इसलिए वह सूरज के उगने पर सूर्य नमस्कार करने या फिर सूर्य को अर्घ्य देने के लिए सूर्य की रोशनी के सामने आ जाता है। शेष सामान्य दुनियाँ तो केवल उगता हुआ सूरज ही देख पाती है। उसे उगते सूरज की किरणों के लाभ का पता नहीं होता, उसके बारे में तो विद्वान ही जानते हैं। सूर्य से हमें ऊर्जा मिलती है, यह तो निर्विवाद है। परंतु उस ऊर्जा के आधार पर हम क्या–क्या कर सकते हैं, यह विद्वान ही जानते हैं।

एक नागा साधु हैं, जिन्होंने काफी लंबे समय से भोजन नहीं किया। वे सवेरे–सवेरे आधा घंटे उगते सूरज के सामने खड़े हो जाते हैं। वे कहते हैं कि इससे इतनी ऊर्जा मिलती है कि आपको भोजन करने की आवश्यकता नहीं होती। यदि आपका भोजन चार रोटियों का है और यदि प्रतिदिन आप सूरज की किरणों का सेवन करते हैं, तो आपके भोजन की मात्रा घटने लगेगी, परंतु आपकी ऊर्जा में कोई कमी नहीं आएगी। आईबी के एक डायरेक्टर जनरल हुआ करते थे कार्तिकेयन। भारत सरकार द्वारा जो कैलाश मानसरोवर की यात्रा जाती है, उसमें यही नागा साधु भी जा रहे थे। वे न तो कोई कपड़ा पहनते थे और न ही कुछ खाते–पीते थे। वे केवल प्रतिदिन सवेरे में सूर्य के सामने बैठकर अपना आहार लेते थे। इस कारण सरकार को उन पर संदेह था कि वे कहीं चीन के जासूस तो नहीं है। इसलिए कार्तिकेयन को उन पर नजर रखने के लिए कहा गया। उन्होंने उस साधु पर पूरी यात्रा के दौरान 24 घंटे नजर रखी। मानसरोवर की भयानक सर्दी में भी वे वैसे ही बिना कपड़ों के रहते थे। बाद में कार्तिकेयन उस साधु को आज से 7–8 वर्ष पहले दिल्ली में हुए एक कार्यक्रम में भी लेकर आए थे। इसी प्रकार बड़ी सँख्या में ऐसे जैन मुनि हैं, जो कई–कई महीने आहार नहीं लेते। नासा ने भी ऐसे मुनियों को अपने यहाँ बुलाकर उन पर अनुसंधान किया है। वे अंतरिक्ष यात्रियों को न्यूनतम भोजन पर रखने की विधि जानना चाहते थे। वास्तव में यह तो विज्ञान का विषय है, जिसे हमारे यहाँ आस्था से जोड़ दिया गया। आस्था से इसे जोड़ने का कारण उपरोक्त वेदमंत्र में बताया गया है। सामान्य व्यक्ति विज्ञान को नहीं समझता, इसलिए उसके लिए इसे आस्था से जोड़ दिया गया है। परंतु विद्वान तो जानते हैं कि इसका रहस्य क्या है। अब आधुनिक विज्ञान द्वारा किए गए अनुसंधानों के आलोक में इस मंत्र को समझने का प्रयास करते हैं।

आज का विज्ञान बताता है कि सूरज की जो किरणें तिरछी होकर धरती पर आती हैं, उनमें इन्फ्रारेड यानी कि उष्णता वाली किरणें कम होती हैं। उनमें दृश्य तरंगों की बजाय अदृश्य तरंगों की सँख्या अधिक होती हैं। इन अदृश्य तरंगों को ही हम पराबैंगनी किरणें कहते हैं। इन पराबैंगनी किरणों में एक होती है पराबैंगनी बी। इसका तरंगदैर्ध्य है 285 से 315 नैनोमीटर। यह पराबैंगनी बी किरण ही हमारे शरीर में विटामिन डी बनाती है। सुबह नौ बजे से पहले के सूर्य की रौशनी में यह किरण पाई जाती है, उसके बाद इसका परिमाण कम होता हुआ समाप्त हो जाता है।

इसका सीधा अर्थ है कि सुबह उठ कर सूर्य का दर्शन करना और उसकी रौशनी का खुले बदन सेवन करना काफी लाभकारी है। इसी बात को वैज्ञानिक या डाक्टर भी कहने लगे हैं कि यदि सुबह 15–20 मिनट सूर्य की रोशनी का सेवन कर लिया जाए, तो शरीर को दिन भर के प्रयोग हेतु विटामिन डी मिल जाता है। यही बात इस वेद मंत्र में कही गई है। यही वह देवताओं का प्रसाद है, जो हमारे लिए सूर्य की किरणें लेकर आ रही हैं। इसे विद्वान यानी कि वैज्ञानिक, डाक्टर आदि तो जानते हैं, परंतु आमजन केवल आस्थावश ही सूर्य नमस्कार और जल देना आदि क्रियाएँ करता है। नवजात शिशु को भी सुबह की हल्की धूप का सेवन कराना चाहिए। इससे उसके शरीर में पीलिया उत्पन्न नहीं होता और बच्चा भी हृष्ट पुष्ट रहता है। यदि बच्चे को हल्की पीलिए की शिकायत है, तो भी हल्की धूप का सेवन लगातार दस दिन कराने से अतिशय लाभ मिलता है।

(भारतीय धरोहर से साभार)

समरस समाज ही सशक्त भारत की रीढ़ : विनायक राव देशपांडे

रुड़की, उत्तराखंड। विश्व हिन्दू परिषद के तत्वावधान में आयोजित सामाजिक समरसता गोष्ठी ने एक बार फिर यह संदेश दिया कि सामाजिक एकता ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। कार्यक्रम में रविदासीय, अनुसूचित जाति – जनजाति समाज के प्रमुख व्यक्तित्वों सहित विभिन्न वर्गों के अनेक प्रबुद्ध लोग सम्मिलित हुए। सामाजिक समरसता गोष्ठी के मुख्य वक्ता विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री विनायक राव देशपांडे ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि समरस समाज ही सशक्त भारत की रीढ़ है। जाति, पंथ और भेदभाव की दीवारें गिराकर ही हम एक ऐसा भारत बना सकते हैं, जो न केवल मजबूत बल्कि आत्मनिर्भर और अजेय हो। जब समाज जाति, वर्ग, क्षेत्र, भाषा और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एकात्मता की भावना से आगे बढ़ता है, तभी राष्ट्र शक्तिशाली बनता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि छुआछूत, अस्पृश्यता और भेदभाव मानवता के लिए घोर अपराध हैं और इनकी समाप्ति ही सामाजिक प्रगति की वास्तविक नींव है। उन्होंने चेतावनी दी कि जातियों में बँटा समाज देश को गुलामी की ओर ले जाता है, जबकि समरसता हमें स्वतंत्रता, शक्ति और गौरव प्रदान करती है। समरसता केवल सामाजिक न्याय का आधार नहीं, बल्कि यह साँस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय शक्ति का भी मूल है।

साध्वी ऋचा ने कहा कि एक समान मान–सम्मान, अवसर और आत्मीयता ही समरसता का सार है। यह भाव केवल भाषणों से नहीं, बल्कि हमारे आचरण और व्यवहार से समाज में उतरना चाहिए। समरस समाज राष्ट्र को स्वतंत्र, सशक्त और गौरवशाली बनाता है। सामाजिक समरसता का अर्थ है–हर व्यक्ति को समान मान–सम्मान, अवसर और आत्मीयता देना। यह तभी संभव है, जब हम अपने व्यवहार से भेदभाव की दीवारें गिराएँ और एक–दूसरे को परिवार के सदस्य की तरह स्वीकार करें।

गोष्ठी में समाज को एकसूत्र में बांधने के लिए अपने विचार रखे गए और उपस्थित जनों से आह्वान किया कि वे अपनी दिनचर्या में समरसता के व्यवहार को अपनाएँ। गोष्ठी में नारा दिया गया कि हर वर्ग की समान भागीदारी–यही सशक्त भारत का आधार, एकता में शक्ति है–समरसता में राष्ट्र की विजय है। कार्यक्रम का समापन इस दृढ़ संकल्प के साथ हुआ कि समरसता आज समाज की महती आवश्यकता है। जब हर वर्ग, हर व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के समान रूप से प्रगति के पथ पर चलेगा, तभी 'सशक्त, आत्मनिर्भर भारत और अजेय भारत' का स्वप्न साकार होगा।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

छत्तीसगढ में बजरंग दल का तीन दिवसीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

04 जुलाई, 2025 को राजनंदगाँव (छत्तीसगढ़) में बजरंग दल का तीन दिवसीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग क्षेत्र संगठन मंत्री जितेन्द्र सिंह पवार के द्वारा दीप प्रज्वलन कर प्रारम्भ हुआ। प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन अवसर पर क्षेत्र संगठन मंत्री ने वर्ग के महत्व और युवा शक्ति के निर्माण के लिए बजरंग दल की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लव जिहाद से बेटियों की रक्षा, गोमाता की रक्षा और धर्मांतरण को रोकने का कार्य किया। 1996 में अमरनाथ यात्रा के समय आतंकियों की चुनौती स्वीकार कर लाखों युवकों को लेकर यात्रा कर हिंदुओं को प्रेरित किया।

शौर्य वर्ग को प्रांत मंत्री विभूतिभूषण जी, संगठन मंत्री नंददास जी, प्रांत बजरंग दल संयोजक ऋषि, प्रांत सह मंत्री नंदू राम साहू, चंद्रशेखर वर्मा क्षेत्र मंदिर अर्चक संपर्क प्रमुख का भी अलग–अलग सत्रों में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। केंद्रीय मंत्री अम्बरीश सिंह जी ने वर्तमान चुनौतियाँ और बजरंग दल की भूमिका पर चर्चा करते हुए सभी को समाधान के लिए तैयार रहने को कहा। नगर में शौर्य संचलन के साथ समापन हुआ।

चिरंजीलाल धानुका स्मृति समाजसेवा अवार्ड प्रज्ञाता फाउंडेशन को

सेवा एवं संवेदना की दृष्टि जगाना जरूरी : ए.पी. सिंह

नई दिल्ली, 12 अगस्त 2025। लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा ने सैंडल शूट्स, नोएडा में आयोजित पदस्थापन एवं जन्माष्टमी समारोह में प्रमुख गैर सरकारी संगठन प्रज्ञाता फाउंडेशन को वर्ष–2025 के 'चिरंजीलाल धानुका स्मृति समाजसेवा अवार्ड' से सम्मानित किया गया। क्लब की ओर से प्रति वर्ष दिये जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये का चेक, शॉल एवं शील्ड प्रदत्त की गई। श्री महेन्द्र कुमार धानुका, जनपदपाल लॉयन लायन ओंकार सिंह रेनू, पूर्व जनपदपाल लॉयन एन. के. गुप्ता, उप जनपदपाल प्रथम लॉयन संदीप कुमार, उप जनपदपाल द्वितीय लॉयन प्रतिभा अग्रवाल, पीआरओ श्री के.के. सचदेवा, क्लब के अध्यक्ष लॉयन अभिषेक जैन, पूर्व अध्यक्ष भीमसेन गोयल, पुरस्कार चयन समिति अध्यक्ष लॉयन राजेश गुप्ता एवं लॉयन आनंद महेश्वरी ने प्रज्ञाता फाउंडेशन को यह पुरस्कार प्रदत्त किया। उद्घाटनकर्ता लॉयन के.एम. गोयल ने अपने प्रेरक उद्बोधन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की।

विशेष आकर्षण रहा लायंस क्लब इंटरनेशनल के प्रेसिडेंट लायन ए.पी. सिंह का प्रेरणादायक वीडियो संदेश, जिसने पूरे वातावरण को ऊर्जा से भर दिया और उपस्थित सभी सदस्यों ने खड़े होकर इस संदेश का स्वागत किया। लॉयन ए.पी. सिंह ने कहा कि लायनिज्म कोरा आमोद–प्रमोद का मंच नहीं है, बल्कि यह जीवन को नजदीकी से देखने एवं सेवा एवं परोपकार के प्रकल्पों को आकार देने एवं संवेदना की दृष्टि जगाने का उपक्रम है। उन्होंने लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा को विशिष्ट एवं सक्रिय क्लब बताया। अध्यक्ष लायन सीए अभिषेक जैन के गतिशील नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम ने सेवा–भाव और उत्सव के आनंद को एक साथ पिरो दिया। अपने संबोधन में अध्यक्ष जैन ने लायनिज्म के वास्तविक सार पर एक प्रभावशाली संदेश दिया और सदस्यों को यह याद दिलाया कि "हम लायन क्यों हैं।" नव–नियुक्त टीम ने लायंस क्लब इंटरनेशनल के वैश्विक उद्देश्यों के अनुरूप प्रभावी सामुदायिक सेवा को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इंस्टॉलेशन का संचालन पीडीजी लायन नरगिस गुप्ता द्वारा अत्यंत सुंदरता से किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि जनपदपाल ओंकार सिंह रेनू ने नवमनोनीत अध्यक्ष लॉयन श्री अभिषेक जैन और उनकी टीम को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि लॉयनिज्म दुनियाँ का सबसे बड़ा सेवा–संगठन है।

समारोह में 10 नए सदस्यों का स्वागत, प्रतिष्ठित और सीए सी.पी. अग्रवाल मेमोरियल स्कॉलरशिप अवार्ड का चार सीए अभ्यर्थियों को चेयरपर्सन लायन एन.के. बंसल एवं को–चेयरपर्सन लायन कोमल अग्रवाल ने प्रदान किया। 25 गौरवशाली वर्ष पूर्ण करने वाले लायन सदस्यों का भी सम्मान किया गया तथा लायन ललित नारंग को लायन ऑफ द मंथ के रूप में सम्मानित किया गया। क्लब अपने गौरवपूर्ण मूलमंत्र–वी सर्व को पुनः दोहराते हुए समाज सेवा के नए अध्याय की शुरुआत कर रहा है।

कार्यक्रम का संचालन इंस्टॉलेशन चेयरपर्सन लायन ओ.पी. बहेती के कुशल मार्गदर्शन में हुआ और मंच संचालन मास्टर ऑफ सेरेमनी लायन अदीप वीर जैन ने अत्यंत सुंदरता से किया। लियो सदस्यों ने भी सक्रिय और सराहनीय भूमिका निभाकर कार्यक्रम में नई ऊर्जा का संचार किया। जन्माष्टमी उत्सव, जिसमें भक्ति संगीत, साँस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और मनमोहक सजावट शामिल थीं, चेयरपर्सन लायन सुनील अग्रवाल एवं को–चेयरपर्सन लायन राजेश गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित हुआ, जिसने इस अवसर को और भी दिव्य बना दिया। पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लॉयन एन. के. गुप्ता ने लॉयनिज्म के बारे में अपने विचार रखे। पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स की गरिमामयी उपस्थिति और पूरे क्लब के सदस्यों की उत्साही भागीदारी ने इस आयोजन को अविस्मरणीय बना दिया। लायन सचिव रवि अग्रवाल और लायन कोषाध्यक्ष चिन्मय बंसल ने कार्यक्रम की सफलता में अहम भूमिका निभाई। लियो राहिनी जैन, लियो श्रुति गर्ग एवं लियो आर्नव जैन को अलकनंदा लियो क्लब का क्रमशः अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष चुना गया। दीप प्रज्जवलन एवं गणेश वन्दना के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ।

lalit.r.garg@gmail.com

श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ राजस्थान प्रांत की कार्यकारिणी बैठक संपन्न

गुरु जी के संदेश को घर-घर पहुंचाना मेरा सौभाग्य : अध्यक्ष राजकुमारी जाटव

करौली, राजस्थान। श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ राजस्थान प्रांत की प्रदेश कार्यकारिणी बैठक दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी करौली में संपन्न हुई। इस बैठक में समस्त भारत से लोग उपस्थित हुए। इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री आत्माराम परमार, राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरजीत कुमार, राष्ट्रीय मंत्री विक्रम जीत, राष्ट्रीय प्रवक्ता राजवीर सिंह, निवाई विधायक रामसहाय वर्मा जी उपस्थित रहे। राजस्थान पीठ की अध्यक्ष पूर्व विधायक राजकुमारी जाटव ने सभी अतिथियों का गुरु जी का चित्र शाल, माला और पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया।

राजकुमारी जाटव ने बैठक में सभी लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे एक महान समाज सुधारक सुधार, समरसता–समानता का पाठ पढ़ाने वाले महान संत श्री गुरु रविदास जी के विचारों का समस्त राजस्थान में प्रचार प्रसार करने की जिम्मेदारी अध्यक्ष के रूप में मिली है। उन्होंने विश्व महापीठ के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दुष्यंत कुमार गौतम जी का आभार व्यक्त किया। आत्माराम परमार ने कहा कि हम पीठ के माध्यम से संत शिरोमणि गुरु रविदास जी की वाणी को देश–विदेश में प्रचारित–प्रसारित करके देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं। मध्य युग के महान संत रविदास जी ने सभी को भाईचारा, बंधुत्व, मानवीयता, समरसता पर बल देते हुए जातिप्रथा, आडंबर जैसी कुरीतियों पर अपने लेखन द्वारा सशक्त प्रहार करते हुए मन की शुद्धता अर्थात कटौती में गंगा की बात कही। सुरजीत ने विश्व महापीठ का प्रयोजन और उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह विश्व महापीठ गुरु जी की वाणी को लेकर भारत के प्रत्येक घर में जाने का प्रयास करेगी। भारत के अलावा पीठ दूसरे देशों में भी अपना कार्य कर रही है। पीठ का मूल उद्देश्य लोक कल्याण है। राष्ट्रीय प्रवक्ता राजवीर ने बाबा साहब और संत गुरु रविदास जी के जीवन के महत्वपूर्ण बिंदुओं से परिचित कराया। दोनों ही महान विभूतियों के लिए देश सर्वोपरि था। राष्ट्रवादी विचार दोनों के व्यक्तित्व और कृतित्व में विद्यमान है। निवाई विधायक रामसहाय वर्मा ने सभी के समक्ष अपनी बात रखते हुए कहा समस्त समाज को एक होकर मिलजुल कर देश निर्माण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। हम सभी को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। दूसरों पर दोषारोपण करने से पहले हमें अपना विवेचन और विश्लेषण भी अवश्य करना चाहिए। अपने अंदर छुपी बुराइयों को समाप्त करके देश निर्माण का कार्य करना चाहिए। पीठ के राष्ट्रीय मंत्री विक्रम ने कहा कि संतों की वाणी को निरंतर पढ़ते रहना चाहिए, जिससे कि हमारी अंतरआत्मा शुद्ध बनी रहे। समाज सुधारकों के मस्तिष्क में शांति, पांव में चक्कर, मुँह में शक्कर रहनी चाहिए। कार्यकारिणी बैठक में मुख्य अतिथियों द्वारा नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए। इस भव्य आयोजन में लगभग 400 लोगों की उपस्थिति रही।

रक्षा बंधन २०२५ : सुरक्षा और समुदाय के बंधन का उत्सव

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड–हिंदू संगठन, मंदिर और एसोसिएशन (HOTA) फोरम, भारतीय के सहयोग से हिंदू काउंसिल ऑफ न्यूजीलैंड (एचसीएनजेड, वेलिंगटन) द्वारा आयोजित किया गया। उच्चायोग और भारतीय मूल के लोगों का वैश्विक संगठन (जीओपीआईओ, वेलिंगटन), रविवार, 10 अगस्त 2025 को रक्षा बंधन की जीवंत भावना को जीवंत कर दिया। जॉनसनविले सामुदायिक हॉल। यह स्वतंत्र, रंग–बिरंगा साँस्कृतिक उत्सव आपसी संबंधों के उत्सव से कहीं अधिक था। भाइयों और बहनों – यह हिंदू मूल्यों का एक हार्दिक अनुस्मारक था– प्यार, सम्मान, विश्वास और एक दूसरे की रक्षा और समर्थन करने की प्रतिबद्धता। रक्षा बंधन भी माओरी को दर्शाता है।

व्हाकाव्हानाउंगाटांगा की अवधारणा, सार्वभौमिक फैलोशिप और नारीत्व का सम्मान करती है। गणमान्य व्यक्ति और समुदाय के नेता एकजुट हों। महोत्सव का उद्घाटन भारत की उच्चायुक्त महामहिम सुश्री नीता भूषण ने किया। न्यूजीलैंड के लिए, दीप प्रज्वलन के साथ। शामिल हुए – प्रोफेसर गुना मगेसन, अध्यक्ष, हिंदू काउंसिल ऑफ न्यूजीलैंड, डॉ. पुष्पा वुड, अध्यक्ष, जीओपीआईओ वेलिंगटन, सुश्री मनीषा मोरार, अध्यक्ष, वेलिंगटन इंडियन एसोसिएशनय श्री श्रीकांत भावे, अध्यक्ष, हिंदू स्वयंसेवक संघ और सुश्री प्रभा रवि, लोअर हट के लिए मेयर पद की उम्मीदवार। सभा का स्वागत श्यामा कुमार जेपी ने किया, जिन्होंने वेन की उपस्थिति को स्वीकार किया। फिलिप्स (अध्यक्ष, वेलिंगटन इंटरफेथ काउंसिल), शनीलकुमार (अध्यक्ष, फिजी एसोसिएशन और अध्यक्ष) हिंदू हेरिटेज एसोसिएशन ऑफ न्यूजीलैंड इंक.), प्रेम सिंह (कोषाध्यक्ष, मल्टीकल्चरल न्यूजीलैंड, उपाध्यक्ष, फिजी एसोसिएशन वेलिंगटन इंक.), विनसम लैंग (हट मल्टीकल्चरल परिषद) और अन्य समुदाय के नेता। परंपरा सामुदायिक भावना से मिलती है।

समारोह के मास्टर विजेशनी और देवेश रतन ने प्रार्थना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। अक्षरा रवि द्वारा एक प्रारंभिक नृत्य और सचिव, राधिका रवि द्वारा एक विषयगत परिचय हिंदू काउंसिल (एचसीएनजेड, वेलिंगटन)। अपने संबोधन में प्रोफेसर गुना मैगेसन ने 55 से अधिक हिंदुओं को एकजुट करने के HOTA फोरम के मिशन के बारे में बताया वसुधैव कुटुंबकम के मार्गदर्शक सिद्धांत के तहत न्यूजीलैंड भर में संगठन 'विश्व एक परिवार है।' उन्होंने दो प्रमुख वार्षिक HOTA कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की HOTA फोरम मीटिंग, धर्म–आधारित संगठनों और रक्षा बंधन के बीच सहयोग के लिए मंच महोत्सव, प्रत्येक वर्ष एक अलग सदस्य संगठन द्वारा आयोजित किया जाता है।

इस वर्ष की थीम – 'हम एक हैं, एक–दूसरे की रक्षा कर रहे हैं' की परंपरा को आगे बढ़ाया। अग्नि एवं आपात्कालीन न्यूजीलैंड के सदस्यों सहित प्रथम उत्तरदाताओं को सम्मानित करने के लिए राखी बांधना, न्यूजीलैंड पुलिस और सेंट जॉन एम्बुलेंस, सार्वजनिक सुरक्षा के प्रति उनके समर्पण को पहचानते हैं। समुदाय के नेताओं को भी राखी बांधने का श्रेय दिया गया।

कार्यशालाएँ और चिंतन

सार्जेंट यिन झू (जॉन), जातीय और एशियाई संपर्क के साथ एक कार्यशाला एक विशेष आकर्षण थी। अधिकारी, एनजेड पुलिस, समुदाय के लिए सुरक्षा अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। फायर फाइटर स्टीवर्ट ने भी संबोधित किया। उपस्थित लोगों को अग्नि सुरक्षा के लिए प्रोत्साहित करना और निःशुल्क धूम्रपान अलार्म की पेशकश करना। अपने मुख्य भाषण में, उच्चायुक्त नीता भूषण ने रक्षाबंधन के महत्व पर जोर दिया, समुदायों और प्रथम उत्तरदाताओं के बीच संबंध बनाने में डॉ पुष्पा वुड ने त्योहार के गहरे अर्थ पर विचार किया–'सुरक्षा हमसे शुरू होती है, फिर हमारे परिवारों तक और अंततः हमारे समुदायों तक फैलती है। जैसा व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से, इस रक्षाबंधन पर हम जो सबसे अच्छा वादा कर सकते हैं, वह है हमारे जीवन, घरों और पड़ोस से हिंसा को खत्म करें।'

प्रतिभागी शिल्पा रैनचॉर्ड ने दिन की भावना पर कब्जा कर लिया–'यह हमारे समुदाय तक ही सीमित नहीं था, यह सभी धर्मों के बीच एक प्रेम और सुरक्षा बंधन था Aotearoa की राष्ट्रीयताएँ। राखी बांधने से सभी को एकता की गर्माहट महसूस हुई।' इस महोत्सव को भारतीय उच्चायोग, वेड इन स्टाइल लिमिटेड और ड्रेस सर्कल/21 द्वारा प्रायोजित किया गया था। अनुराधा गुप्ता के पारंपरिक रक्षा बंधन गीत के आदान–प्रदान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। राखियाँ और सांझा जलपान में एक HOTA वेलिंगटन टीम बनाने की योजना की घोषणा की गई।

सितंबर में क्षेत्र के सभी हिंदू संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में स्वामी विज्ञानानंद जी, HOTA फोरम के संस्थापक, भविष्य के कार्यक्रमों की योजना बनाने और उन्हें मजबूत करने के लिए सहयोग।

hindu.nz@gmail.com

हिंदू समाज को विखंडित करनेवाली शक्तियों को देंगे करारा जवाब : अजय पारीक

भोपाल, 3 अगस्त। भोपाल में शनिवार को प्रारंभ हुई विश्व हिंदू परिषद मध्यभारत प्रान्त की दो दिवसीय बैठक आज मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति तथा हिंदू समाज को विखंडित करने वाली शक्तियों के विरुद्ध एकजुटता, नशा मुक्त युवा के संकल्प के साथ पूरी हो गई। बैठक में हुए निर्णयों की जानकारी देते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री श्री अजय जी पारीक ने कहा कि हिंदू समाज का संकल्प है कि अब मंदिर सरकारी कब्जे में नहीं रहेंगे। समाज अब उन्हें मुक्त कराके ही रहेगा।

'हिंदू एकता पर प्रहारों का देंगे करारा जवाब' – इसके साथ ही बैठक में जाति, भाषा, प्रांत, क्षेत्र व लिंग इत्यादि के आधार पर हिंदू समाज के विविध घटकों को अलग–अलग करने की विभाजनकारी मानसिकता के विरुद्ध एक प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसमें सभी कार्यकर्ताओं, पूज्य संतों व सामाजिक संगठनों के साथ संपूर्ण हिंदू समाज से आह्वान किया गया कि वह समाज को तोड़ने वाली इन शक्तियों को पहचान कर अपने अंतर्निहित भेदभावों को दूर कर, संगठित रहें, तो, हमें ना कोई तोड़ सकेगा और ना ही मिटा सकेगा।

विश्व हिंदू परिषद मध्यभारत के प्रान्त अध्यक्ष श्री नवल भदौरिया ने यह भी कहा कि कभी पीडीए तो कभी मीम – भीम, कभी आर्य–द्रविड़ तो कभी महिषासुर–दुर्गा, कभी भाषा–जाति तो कभी राज्य व क्षेत्रवाद, तो कभी ओआरपी जैसे मुद्दों के माध्यम से कुछ हिंदू द्रोही शक्तियाँ हिंदू समाज की एक जुटता को तोड़ने में लगी हैं। हमने 1969 में ही संकल्प लिया था कि 'हिन्दवः सोदरा सर्वे, ना हिंदू पतित भवेत्' अर्थात् हिंदू हम सब भाई हैं। कोई ऊँचा नीचा नहीं है। हम हिंदू द्रोहियों के विभाजनकारी षड्यंत्रों को फलीभूत नहीं होने देंगे।

इस सम्बन्ध में विहिप की केंद्रीय प्रबंध समिति बैठक जलगांव में, 'संगठित एवं सशक्त हिंदू ही समाज विखंडन के षड्यंत्रों का एकमेव समाधान' नाम से पारित एक प्रस्ताव में कहा गया है कि 'इन विघटनकारी प्रवृत्तियों के पीछे विस्तारवादी चर्च, कट्टरपंथी इस्लाम, मार्क्सवाद, धर्मनिरपेक्षतावादी तथा बाजारवादी शक्तियाँ तीव्रगति से सक्रिय हैं। इसके लिए विदेशी वित्त पोषित, तथाकथित प्रगतिशीलतावादी, धर्मांतरणकारी शक्तियाँ और भारत विरोधी वैश्विक समूह भी सक्रिय हैं। इनका अंतिम लक्ष्य हिंदू समाज को तोड़ना और भारत की जड़ों पर प्रहार करना है।' प्रस्ताव में हिंदू समाज से आह्वान करते हुए कहा गया है कि वो 'विखंडनकारी शक्तियों को पहचान कर अपने अंतर्निहित भेदभावों को जड़मूल से समाप्त करें।' इसमें सरकारों से भी 'नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में समाविष्ट' करने का आह्वान किया गया है।

मंदिर स्वाधीनता आंदोलन – श्री सुरेन्द्र सिंह प्रान्त संगठन मंत्री ने कहा कि बैठक में मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति हेतु एक व्यापक कार्य योजना भी बनाई गई है। इसके अंतर्गत हिंदू समाज के प्रतिनिधि आगामी 7 से 21 सितंबर के बीच राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मिलकर इस संबंध में ज्ञापन देंगे। प्रत्येक महानगर में प्रबुद्ध जनों की सभा करके इसके प्रति समर्थन बढ़ाया जाएगा। दूसरे चरण में, देश की सभी बड़ी विधानसभाओं के सत्र के दौरान विधायकों से व्यापक संपर्क करेंगे, जिससे वे अपनी राज्य सरकारों पर इस हेतु उचित दबाव बना कर, मंदिरों को स्वाधीन करा सकें।

श्री विमल जी प्रान्त प्रचारक ने संघ शताब्दी वर्ष के विषय में सत्र लिया। भोपाल स्थित शारदा विहार केरवा डेम में संपन्न हुई इस द्विदिवसीय बैठक में विहिप के प्रान्त मंत्री ने संगठन की छमाही प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत कर पिछली बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन भी सदन से कराया। इसमें विहिप के बजरंग दल, दुर्गावाहिनी, मातृशक्ति, गौरक्षा, सेवा, समरसता, सत्संग, धर्मप्रसार, मठ मंदिर जैसे आयामों के प्रान्त प्रमुख भी उपस्थित थे। इसमें सम्पूर्ण प्रांत के 146 विहिप पदाधिकारियों ने भाग लिया।

vhpmadhybharat@gmail.com

भोपाल (मध्य प्रदेश) में विहिप मध्यभारत प्रान्त की दो दिवसीय प्रांत बैठक के अवसर पर उपस्थित बजरंग दल, दुर्गावाहिनी, मातृशक्ति, गौरक्षा, सेवा, समरसता, सत्संग, धर्मप्रसार, मठ मंदिर, प्रचार आयाम के प्रांत प्रमुख तथा प्रांतीय पदाधिकारी

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड में हिंदू संगठन, मंदिर और एसोसिएशन (HOTA) फोरम द्वारा सुरक्षा और समुदाय के बंधन का उत्सव अर्थात् रक्षाबंधन मनाया गया

पटना (बिहार) में सेना के जवानों को रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन उत्सव मनाती विहिप दुर्गावाहिनी/मातृशक्ति की कार्यकर्त्रियाँ

देहरादून (उत्तराखण्ड) में दिव्यांग बच्चों संग रक्षाबंधन पर्व मनातीं विश्व हिंदू परिषद-मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी की कार्यकर्त्रियाँ

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.08.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

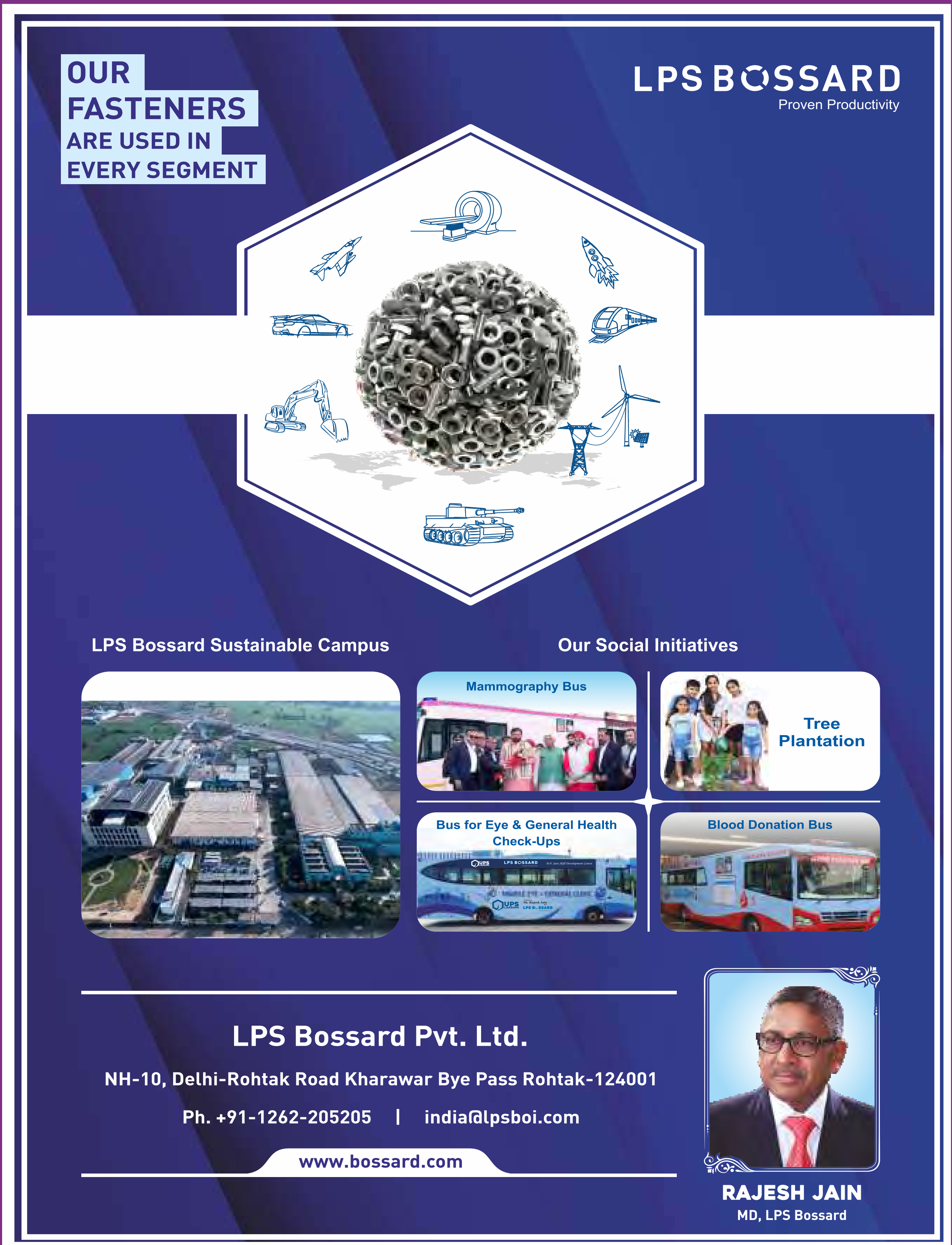

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी